अंक 10
अक्टूबर, वर्ष - 22

सभापति
डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी
president@chaturvedimahasabha.in

सचिव
श्री मुनीन्द्रनाथ चतुर्वेदी
मोबा. 098711-70559

कोषाध्यक्ष
श्री महेशचन्द्र चतुर्वेदी
मोबा. 09868875645

संपादक सलाहकार मंडल
डॉ. कुश चतुर्वेदी, इटावा
पूर्व संपादक

संपादक
शशांक चतुर्वेदी
पत्र व्यवहार का पता:
'चतुर्वेदी चंद्रिका', ई-8/जी2/255
गुलमोहर कॉलोनी, भोपाल
(मध्यप्रदेश)
मोबा. 9826086879
ई- मेल :
sampadak.chaturvedichandrika@gmail.com

वेबसाइट : www.chaturvedimahasabha.in

मासिक पत्रिका चतुर्वेदी चंद्रिका में प्रकाशित लेखकों में व्यक्त विचार संबंधित लेखक के हैं। उनसे संपादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निबटारा भोपाल अदालत में किया जायेगा।

चतुर्वेदी चन्द्रिका

अपनों से मन की बात	6
संपादकीय	7
महासभा कार्यकारिणी	8
संपादक के नाम पत्र	9
देवी आराधना का पर्व : नवरात्र	10
उपनयन संस्कार	13
निवेदन	15
सप्तऋषि	16
विश्व हिन्दी सचिवालय	19
शारदीय नवरात्र	20
हमारी कल्पना का स्वर्णिम भारत...	21
चतुर्वेदी चंद्रिका क्यों?	22
दिव्य ऊर्जा एवं विज्ञान	23
देवी जी की आरती	24
भारत के महान संत श्रृंखला - श्री रामालिंगम स्वामी	25
कविताएं	26
शाखा समाचार	29
समाज समाचार	32
शोक समाचार	32

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
Account No. : 1006238340
IFSC Code : CBIN0283533
Branch : Central Bank of India
Anand Vihar, Delhi

पत्रिका पाँच वर्षीय तथा महासभा आजीवन सदस्यता शुल्क
1000 + 501 = 1501/-
महासभा सत्र + पत्रिका वार्षिक सदस्यता शुल्क-
101+ 251 = 352/-

प्रकाशक : मुनीन्द्रनाथ चतुर्वेदी, श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के लिए स्पेसिफिक ऑफसेट, भोपाल से मुद्रित, संपादक शशांक चतुर्वेदी

सभी सदस्यों को पत्रिका डाक द्वारा भेजी जाती है। पत्रिका न मिलने की दशा में पत्रिका कार्यालय की कोई जवाबदेही नहीं होगी।

अपनों से मन की बात

● डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी
Email : president@chaturvedimahasabha.in

बंधुवर पालागन,

वर्षा ऋतु अपनी समाप्ति की ओर बढ़ रही है व शरद ऋतु प्रारंभ होने को है। मौसम में शाम को हल्की गुलाबी ठंडक बढ़ रही है। यह ऋतु परिवर्तन स्वास्थ्य के अनुसार सतर्क रहने का समय है। ऋतुओं के इस संक्रमण काल में अनेक बीमारियां फैलती हैं। ऐसे समय मे सतर्कता आवश्यक है।

शरद ऋतु में माँ की आराधना पर्व शारदीय नवरात्र व बुराई पर जीत का पर्व विजयादशमी देशभर में हर्षोल्लास से मनाया जाता है। यह नौ दिन माता की पूजा,उपासना के होते। देश भर में लोग अलग अलग तरह से माँ की उपासना, आराधना कर भक्ति में लीन रहते है।

महासभा की गुल्लक योजना के अंतर्गत आप सभी के साथ मिलकर लिए गए निर्णय के अनुसार परिवार में हुए मांगलिक अवसरों पर एकत्र राशि को हर नवरात्रि में गुल्लक को खोलकर महासभा को हस्तांतरित की जाएगी। अतः जिन के पास गुल्लक है उन सभी से निवेदन है कि एकत्र राशि महासभा को हस्तांतरित करने की कृपा करें। धीरे धीरे सभी के पास गुल्लक भेजी जा रही है। हस्तांतरण के समय उसमें गुल्लक योजना अवश्य लिखें व महासभा के किसी भी पदाधिकारी या कोषाध्यक्ष को सूचित करें।

महासभा कॉल सेंटर नंबर 0806–102– 0001 पर भी सूचित कर सकते हैं।

विगत वर्ष में आप सभी का अन्नपूर्णा योजना में भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ है। आप सभी के सहयोग से अन्नपूर्णा योजना विगत 11 वर्षों से अनवरत चल रही है। अतः आप सभी से निवेदन है कि इस योजना को निरंतरता देने के लिए इस वर्ष की सहायता राशि शीघ्र भेजने की कृपा करें। अन्नपूर्णा योजना में इस वर्ष सहायता भेजने बंधुओं की सूची इस अंक में संलग्न की जा रही है।

महासभा के ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर हरियाली तीज का कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें बड़ी संख्या में महिलाओं व समाज की बेटियों ने कविता पाठ व भजन गायन किया। समाज से इसको भरपूर सराहना मिली। स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर आयोजित कवि सम्मेलन का प्रयास भी सफल रहा। तत्पश्चात जन्माष्टमी का मैराथन कार्यक्रम आयोजित किया गया, जो लगभग 4 घंटे अनवरत रूप से चला। इन कार्यक्रमों के द्वारा सम्पूर्ण समाज को एक मंच पर लाने का प्रयास किया गया। इन कार्यक्रमों की सफलता के लिए आयोजकों को बहुत–बहुत बधाई। कानपुर सभा के अध्यक्ष व महासभा के पूर्व सभापति विजयशंकर जी को मैं सम्पूर्ण समाज की ओर से सादर श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

शारदीय नवरात्र व विजयादशमी की हार्दिक शुभकामनाएं!!!!!!

*अन्नपूर्णा सहायता प्राप्त लाभार्थी परिवार 38
* प्रति माह प्रति परिवार सहायता राशि 2000 /– रुपये
* सालाना सहायता राशि 9,12,000/– रुपए
* कुल छात्रवृत्ति राशि 70,800/– रुपए
* अभी तक प्राप्त कुल राशि 3,37,075/– रुपये।

संपादकीय

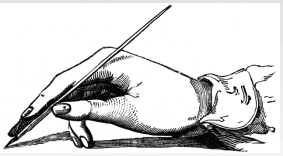

नई जिम्मेदारी के साथ शनैः शनैः वक्त कब गुजर गया, आप लोगों के साथ पता ही नहीं चला। बुजुर्गों की है बात सही है कि समय ही सबसे बड़ा शिक्षक होता है गलतियों से आप सीखते हो व समय आपको नया कुछ सीखने का सबक भी देता है। 4 अक्टूबर 2020 को सभापति जी डॉ. प्रदीप जी ने आपकी सेवा में एक नई जिम्मेदारी के साथ मुझे जोड़ा था। यह 1 वर्ष का समय अपने खट्टे मीठे नए नए अनुभवों के साथ अपनी रोमांचक गति से पूर्ण हुआ।

कुछ इस तरह से सौदा किया,
मुझसे मेरे वक्त ने।
तजुर्बे देकर वो मुझसे मेरी,
नादानियां ले गया।।

विगत एक वर्ष के कार्यकाल में आप सभी के अमूल्य सुझाव व विचारों ने मुझे अपना कार्य करने में भरपूर सहयोग दिया। महासभा को ऑनलाइन अधिवेशन का कवरेज, महासभा की संपूर्ण कार्यकारिणी का सचित्र प्रकाशन, होली पर विशेष संग्रह, कोविड-19 अंक व कविता विशेषांक इस क्रम में प्रमुख रहे। इन सभी अंकों को आप सभी की भरपूर सराहना व स्नेह प्राप्त हुआ। सितंबर माह में प्रकाशित कविता विशेषांक को आप सभी का अत्यधिक प्यार व सराहना मिली। इसकी परिकल्पना व संयोजन में सहयोग के लिए सभापति प्रदीप जी, कुश जी (इटावा) व भरत जी (रिषड़ा) का बहुत-बहुत आभार। इस पत्रिका के प्रकाशन में सार्थक सहयोग हेतु सचिव मुनीन्द्र नाथ जी का सहयोग अतुलनीय है। इस पत्रिका के प्रकाशन में मेरी यात्रा के प्रमुख सहयोगी जिन्होंने मुझे समय-समय पर यथासंभव व मेरी उम्मीदों और आकांक्षाओं के अनुरूप प्रकाशन सामग्री देकर अमूल्य सहयोग दिया। इन समाजसेवी कलमवीरों व लेखनी के धनी श्रीमती उषा जी (भोपाल), भरत जी (रिसड़ा), श्रीमती चित्रा जी (भोपाल), कैलाश जी (कासगंज), दिलीप जी (लखनऊ), अनिरुद्ध जी (लखनऊ), ऋषभ जी (देहरादून) व अन्य सभी का बहुत-बहुत आभार।

शताब्दी वर्ष के अवसर पर प्रस्तुत कविता विशेषांक की प्रशंसा उत्साहवर्धक रही। इसने और अच्छा कार्य करने की प्रेरणा दी। भविष्य में हम और अच्छा कार्य कर सकें, ऐसा प्रयास रहेगा। अनेक प्रशंसा के पत्र व फोन प्राप्त हुए। जिनमें से कई अप्रत्याशित थे। उनमें से कुछ पत्र आपके सम्मुख प्रस्तुत कर रहे हैं। देश के साथ-साथ परदेश से आई रचनाओं ने भी बहुत उत्साह वर्धन किया। इस अंक में माता जी की आराधना पर्व नवरात्र पर लेख आपके सामने प्रस्तुत है। हिंदी सचिवालय की यात्रा उषा चतुर्वेदी जी द्वारा व हिंदी के साथ सांस्कृतिक यात्रा बीना मिश्रा जी के साथ आपको अवश्य पसंद आएगी। मनोज जी द्वारा संत श्रृंखला का एक और माणिक इस अंक में हम दे रहे हैं। समय उपरांत प्राप्त कुछ कविताएं भी आपके अवलोकनार्थ प्रस्तुत है। आशा है इन्हें भी आपका आशीर्वाद मिलेगा। कविता विशेषांक में सामग्री व चित्र संग्रहण में आ. ब्रह्मस्वरूप पांडे जी (नोएडा) व अंबर पांडे जी (भोपाल) का भी मुझे भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ। कर्मयोगी व वरिष्ठ समाजसेवी श्री विजय शंकर जी, कानपुर एवं भाई विशाल जी, आगरा को अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। देवी माँ की आराधाना का पर्व नवरात्रि की मंगल कामनायें।

- शशांक चतुर्वेदी

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा महासभा कार्यकारिणी - 2020-2023

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

संरक्षक : डॉ. सतीश चतुर्वेदी (नागपुर), श्री भरत चंद्र चतुर्वेदी(भोपाल) (पूर्व सभापति), श्री राजेंद्रनाथ चतुर्वेदी "रज्जन" (कोलकाता) (पूर्व सभापति), श्री राजेंद्र आर. चतुर्वेदी, (मुम्बई) (पूर्व सभापति), श्री त्रिभुवन चतुर्वेदी (दिल्ली), श्री कमलेश पाण्डे (नोएडा) (पूर्व सभापति), ले. ज. विष्णुकांत चतुर्वेदी (नोएडा), श्री मदन चतुर्वेदी (कोलकाता), श्री बालकृष्ण चतुर्वेदी (नोएडा)

सभापति : डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी (दिल्ली)

उप सभापति : श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी,(भोपाल), श्री कैलाश चतुर्वेदी (कासगंज), श्री अखिलेश चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री मनोज चतुर्वेदी (बैंगलोर)
मंत्री : श्री मुनींद्र नाथ चतुर्वेदी (नोएडा)
संयुक्त मंत्री : श्री भरत चतुर्वेदी (रिषड़ा), श्री ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी (गाजियाबाद), श्री आशुतोष चतुर्वेदी (कानपुर), श्री अंशुमान चतुर्वेदी (जयपुर)
कोषाध्यक्ष : श्री महेश चतुर्वेदी (दिल्ली)

संपादक,चतुर्वेदी चंद्रिका - श्री शशांक चतुर्वेदी (भोपाल) **ऑडिटर - शिव एसोसिएट,** नई दिल्ली

माननीय कार्यकारिणी सदस्य : श्री नीरज चतुर्वेदी (हिंडौन), श्री दिलीप सिंकदरपुरिया (लखनऊ), श्री ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी (नागपुर), डॉ. कुश चतुर्वेदी (इटावा), श्री शशांक चतुर्वेदी (भोपाल), श्री मनीष चतुर्वेदी (हरदोई), डा. राकेश चतुर्वेदी (मथुरा), श्री विनोद चतुर्वेदी (मुम्बई), डा. राजीव चतुर्वेदी (पुणे), श्री पंकज चतुर्वेदी (मुम्बई), श्री सुशील पाठक (मुम्बई), डॉ. ऋषभ चतुर्वेदी (देहरादून), श्रीमती बीना मिश्रा (हैदराबाद), श्री राकेश चतुर्वेदी(बरेली), श्री करुणेश चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्री अजय चौबे(भोपाल), श्री प्रदीप चतुर्वेदी "लालन" (आगरा), श्री भुवनेश कुमार चौबे(गोंदिया), श्री आलोक चतुर्वेदी (प्रयागराज), श्री पुनीत चतुर्वेदी (आगरा), श्री प्रदीप चतुर्वेदी (ग़ाज़ियाबाद), श्री ललित चतुर्वेदी (कोटा), श्री राहुल चतुर्वेदी (मैनपुरी), श्री विशाल चतुर्वेदी (पुरा), श्री गोविंद चतुर्वेदी (जयपुर), श्री गोविंद चतुर्वेदी (इंदौर), श्री ललित चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री अभयराज चतुर्वेदी (गुरुग्राम), श्री विनय चतुर्वेदी (अहमदाबाद), श्री अभिषेक चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्री प्रवेश चतुर्वेदी (कानपुर) श्री नीलकमल चतुर्वेदी (कोलकाता), श्री हेमंत चतुर्वेदी (नासिक), श्री अनिल चतुर्वेदी (प्रयागराज), श्री सुदीप चतुर्वेदी (फिरोजाबाद), श्री सुशील चतुर्वेदी (फ़रीदाबाद)।

स्थाई आमंत्रित सदस्य : श्री अविनाश चतुर्वेदी (कानपुर), श्री पदम कुमार चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री प्रताप चंद्र चतुर्वेदी (लोनी), श्री सुभाष चतुर्वेदी (मुम्बई), श्री राजेन्द्र प्रसाद चतुर्वेदी "अन्नी" (प्रयागराज), श्री मनमोहन चतुर्वेदी (मैनपुरी), श्री बिपिन पांडेय (गाजियाबाद), श्री विपिन चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री शिव नारायण चतुर्वेदी (कोटा), श्री कमलेश रावत (कोटा), श्री लोकेंद्र नाथ चतुर्वेदी (गाजियाबाद), श्री राहुल चतुर्वेदी (मुम्बई), श्री प्रवीण चतुर्वेदी (हैदराबाद), श्री ईश्वर नाथ चतुर्वेदी (कोलकात्ता), श्री अरुण चतुर्वेदी (जयपुर), श्री अमित चतुर्वेदी (मथुरा), श्री योगेंद्र चतुर्वेदी (ग्वालियर)।

विशेष आमंत्रित सदस्य : श्री नीरज चतुर्वेदी (मैनपुरी), श्री गजेंद्र चौबे (दमोह), श्री दिनकर राव चतुर्वेदी (फरौली), श्री कौशल चतुर्वेदी (दिल्ली), श्री मधुकर पाठक (आगरा), श्री चैतन्य किशोर चतुर्वेदी (फर्रूखाबाद), श्री संजय मिश्रा (कानपुर), श्री अम्बर पाण्डे (भोपाल), श्री अरुण चतुर्वेदी (नागपुर), श्री मुकेश चतुर्वेदी (रिषड़ा), श्री भारत भूषण चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री शशिकांत चतुर्वेदी (आगरा), श्री अरविंद चतुर्वेदी (फिरोजाबाद), श्री महेंद्र चतुर्वेदी (जयपुर), श्री दिलीप चतुर्वेदी (फिरोजाबाद), श्री लेखेंद्र चतुर्वेदी "पुत्तन" (लखनऊ), श्री शशांक गिरीश चौबे (नागपुर), श्री संजय चतुर्वेदी (अहमदाबाद), श्री बसंत रमेश चौबे (भिलाई), श्री नितिन चतुर्वेदी (निम्बाहेड़ा), श्री राजेश चतुर्वेदी, "गुड्डू" (कोलकत्ता), श्री हर्ष मोहन चतुर्वेदी, "मोहित" (आगरा), श्री दिनेश चतुर्वेदी (बाह), मनीष चतुर्वेदी (दिल्ली)।

महिला प्रकोष्ठ : श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी (भोपाल) (संयोजक), श्रीमती नीलिमा चतुर्वेदी (कानपुर), श्रीमती विनीता चतुर्वेदी (देहरादून), श्रीमती समता चतुर्वेदी (दौसा), श्रीमती पूनम चतुर्वेदी (लखनऊ), श्रीमती संध्या चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्रीमती अर्चना चतुर्वेदी (जयपुर), श्रीमती दीपाली चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्रीमती रश्मि चतुर्वेदी (नोयडा)।

युवा प्रकोष्ठ : डॉ. मनीष चतुर्वेदी (कोटा), (संयोजक), श्री सुधांशु चतुर्वेदी (दिल्ली), श्री रीगल चतुर्वेदी (भिंड), श्री दिवस चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री आशीष चतुर्वेदी (आगरा), श्री आशीष चतुर्वेदी (हावड़ा), श्री दुर्गेश चतुर्वेदी (जयपुर) श्री गगन चतुर्वेदी (पुरा), श्री पुलकित चतुर्वेदी (नोएडा)।

चिकित्सा प्रकोष्ठ : डॉ. संजय चतुर्वेदी (आगरा), डॉ. अरविंद चतुर्वेदी (दिल्ली), डॉ. निखिल चतुर्वेदी (आगरा)

आई टी प्रकोष्ठ : श्री ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी (गाजियाबाद), श्री प्रसून चतुर्वेदी (भुवनेश्वर)।

पता : 405-406, चिरंजीव टावर, नेहरू प्लेस, नई दिल्ली - 110049

संपादक के नाम पत्र

शशांक जी अभिवादन। कविता विशेषांक के मुखपृष्ठ पर समाज के प्रतिष्ठित महान कवियों के चित्रण से विशेषांक और भी विशेष बन पड़ा है। धरोहर में बिहारी जी के सरसैया के दोहरे.. ऋषीकेश जी के राम कृष्ण काव्य के उद्धरण, शैल कवि की रहने वाले हैं रीवा के, आचार्य जी का श्री कृष्ण अवतार, भोजराज जी की प्रतिमाएं अंग भंग मंदिर गर्वीले, प्रदीप जी की रेलमपेल वर्तमान में नीरव जी की गज़ल, संतोष चौबे की छोड़ो यार, डॉ कुश जी की अब भोजन है, मनुहार नहीं, भरत जी की जीवन, डॉ सुजाता जी की उजास, उपेन्द्र नाथ जी की होलीपुरा, अंजू जी की साहब के नाम पाती, रेखा जी की आंनलाइन शिक्षा,उषा जी की हिन्दी, राघव जी की कोरोना और जीवन, के साथ ही भविष्य में सारांश जी की कश्मीर पर लिखूं या.... पारुल जी की बड़ी हो गयी है कितनी, समर्थ जी की इतना सन्नाटा क्यों है भाई, मनीष जी की मेरा घर, संजय मिश्रा की दिल, जैसी कविताएं जीवन में चिड़ियों की चहचहाहट लग रही है। आपका संपादकीय चंद्रिका के इतिहास में मणिकर्णिका समान है।

शुभकामनाओं सहित.....

– **सुचित्रा सिंकदरपुरिया,** लखनऊ

000

आदरणीय सम्पादक जी, सादर प्रणाम। आपके दायित्व सम्हालने के बाद से ही चंद्रिका में निरन्तर निखार आ रहा है, कविता विशेषांक इसमें एक ध्रुवतारा लगता है। डॉ. प्रदीप जी ने भी महासभा की शताब्दी इतिहास के प्रकाशन की सुखद सूचना दी है, उनका महासभा की अन्नपूर्णा योजना या शिक्षा सहायता योजना में सहयोग का आग्रह समयोचित है। हम सबको मिलकर यथासंभव सहयोग करना चाहिए।

– **मनोज कुमार,** मैनपुरी

000

पालागन, जुलाई माह के अंक में इतने दुखद समाचारों को देखा कि आंखे भर आईं। समाज के एक सच्चे सेवक और हम सबके लिए प्रेरणा स्त्रोत प्रिय डॉ. मनोज, आगरा को खो देना समाज की एक बहुत बड़ी क्षति रही। सितम्बर माह में युवा मंच, आगरा के मेरे प्रिय विशाल भाई का दुखद निधन अल्प आयु में जाना मेरे लिए निजी आघात है। अंत में चंद्रिका की टीम को साधुवाद जिन्होंने इस मुश्किल समय में जुलाई माह में कोविड के मध्यनजर चिकित्सीय परामर्शों से युक्त एक उत्तम अंक प्रकाशित किया। पिछले माह संग्रहणीय कविता विशेषांक प्रकाशित किया। पुनः बधाई।

– **आशीष चतुर्वेदी**, आगरा

000

संपादक महोदय, सादर पालागन। माह अगस्त २०२१ का अंक प्राप्त हुआ। समस्त प्रकाशित लेख अत्यंत उच्च कोटि के है। विशेष रूप से लेख एक कर्तव्य–अंतिम संस्कार व दान–जरूरत भी जरूरी भी अत्यंत प्रशंसनीय। दोनों ही लेख हमारी सामाजिक परंपरा को दृष्टिगत रखते हुए लिखे गए है। इसके अतिरिक्त लेख खेल और व्यायाम अत्यंत रोचक लगा क्योंकि खेल एवं व्यायाम दोनों ही हमारे स्वस्थ जीवन के लिए आवश्यक है।

– **संजीव चतुर्वेदी,** मैनपुरी

000

पालागन, कोरोना काल के समय लगभग हर व्यवस्था डगमगाई सी है उसी कारण पत्रिका सुचारु रूप से नही छप पा रही है, उसके बावजूद इस माह की पत्रिका देखकर आपकी लगन और मेहनत की मैं भूरिभूरि प्रशंसा करता हूँ आपके कार्यकाल में अपनी पत्रिका में बहुत बढ़िया निखार आता जा रहा है, सम्पादकीय पढ़कर आनन्द आ जाता है समय समय पर विशेषांक निकलना बहुत कठिन कार्य होता है पर उनको भी आप बखूबी निभा रहे हैं, अगस्त माह की पत्रिका में अन्तिम संस्कार के ऊपर शारदा जी (भोपाल), दिलीप भाईसाहब (लखनऊ) एवं चित्रा जी (भोपाल) द्वारा लिखे गए लेख पढ़कर काफी जानकारी प्राप्त हुई।

समाज जैसी उम्मीद करता था आपसे, आप उस पर खरे उतरते जा रहे हो। आपके द्वारा वर्षो से लगातार की जा रही सामाज सेवा अतुल्नीय है। आप द्वारा जो अपने सामाज को सेवाएं दी गयी है और जो दी जा रही है। उसके लिए कुछ भी लिखा जाए वो बहुत कम होगा। समाज सेवा के लिए आपकी लगन अपने अनुजों को जरूर प्रेरित करेगी। आपका सामाज प्रेम सदा यूंही ही बना रहे, मेरी शुभकामनाएं आपके साथ हमेशा रहेगी।

– **संजय मिश्रा,** कानपुर

000

कविता विशेषांक के प्रकाशन के लिए बहुत–बहुत बधाई। इस तरह के अंक सालों साल संग्रह करके रखने लायक हैं। इतने सारे नए पुराने कवियों का समावेश संपादक जी की मेहनत व लगन को दर्शाता है। इनमें से कई नाम हमने पूर्व में भी सुने हैं। नामों के साथ फोटो का संकलन भी प्रशंसनीय है।

– **रंजन चतुर्वेदी,** आगरा

000

सम्पादक जी पालागन।

चंद्रिका का शताब्दी वर्ष का कविता विशेषांक मिला,सच में शताब्दी के लिए संग्रहणीय बन पड़ा है। 14 वीं सदी के महानायक बिहारी जी, हास्य रसावतार जगन्नाथ प्रसाद जी, बनारसी दास जी, भैया साहब श्रीनारायण जी, ऋषीकेश जी, हास्य कवि शैल जी, प्रदीप चौबे से लेकर आधुनिक युग के नीरव जी, प्रो. हेरम्ब जी, संतोष चौबे, डॉ. कुश जी से उदीयमान सारांश जी, संजय मिश्रा के साथ ही महिलाओं में ऊषा जी, वीणा जी, विनीता जी को एक साथ प्रस्तुत कर आप जैसे बाजीगर ने गागर में सागर को चरितार्थ कर दिया है। मेरे ससुर ज्वाला प्रसाद जी की कविता तो विशेष उपहार जैसी ही है। सभापति डॉ. प्रदीप जी का मार्गदर्शन एवं डॉ. कुश जी,भरत जी का सहयोग भी प्रशंसनीय है। सफलता की शुभकामनाओ के साथ अन्य विषयों पर विशेषांक का इंतजार रहेगा ।

– **त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी**
(होलीपुरा/ कोलकाता)

000

पालागन, एक विचार आया है कि डॉ0 प्रदीप चतुर्वेदी अध्यक्ष श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा, जोकि समाज सेवा के क्षेत्र में बहुत वर्षों से चिरपरिचित नाम है इनका महासभा का कार्यकाल लगभग आधा पूर्ण हो चुका है , यह कार्य केवल अनलाइन मीटिंग्स में ही सम्पन्न हो पाया है, इस अवधि में माननीय अध्यक्ष जी नें नये नये कीर्तिमान स्थापित किये। इन परिस्थितियों में लगता है कि पूरा कार्यकाल अनलाइन ही पूर्ण होगा। मेरा समाज से अनुरोध है कि क्यों न पुनः नये सत्र के लिये डॉ 0 प्रदीप चतुर्वेदी जी जैसे योग्य, अनुभवी समाज सेवी से ही आगामी सत्र ग्रहण करनें का सामूहिक निवेदन कर समाज में नई नई योजनाओं को लाभान्वित करवाने में सहयोग की अपेक्षा करे।

– **प्रदीप चतुर्वेदी लालन,** आगरा

000

पालागन, इस अंक की चंद्रिका के कविता विशेषांक को पढ़कर जो आनंद की अनुभूति हुई उसे में शब्दों में बयां नहीं कर सकता। मैं शशांक जी और उनकी समस्त टीम को जिन्होंने हमारे समाज के पूर्व, वर्तमान में स्थापित तथा भविष्य के सितारों की रचित कविताओं का जो प्रकाशन किया, के लिए हृदय से प्रशंसा करता हूं और सभी को धन्यवाद देता हूं। आप की मेहनत ने चंद्रिका मे चार चांद लगा दिए। सब रचनाएं एक से बढ़कर एक हैं। कविताओं का यह संग्रह अपने आप में अद्भुत और ऐतिहासिक है।

– **पुनीत चतुर्वेदी**, आगरा

000

"परिमितं वै भूतम, अपरिमितं भव्यम" को सार्थक करते हुए कविता विशेषांक का प्रकाशित होना अत्यन्त श्लाघनीय है। सचमुच ही यह विशेषांक समाज की विभूतियों की रचनाओं का समय सापेक्ष आइना है। शशांक जी आपकी सूझ–बूझ अत्यंत अभिनंदनीय है, आपने अपने सशक्त संपादन का रचनात्मक अबदान प्रदान करते हुए इस विशेषांक को बहुत ही उपयोगी और साथ ही साथ संग्रहणीय बना दिया। इस विशेषांक के माध्यम से आपने समाज के उन कवियों से परिचित कराने का प्रयास किया है, जिनकी रचनात्मकता ने साहित्य और समाज दोनों को ही ऊंचाइयां प्रदान की हैं एवं जो हमारी अमूल्य धरोहर है। इन महान विभूतियों का स्मरण, हमारा अपनी बहुमूल्य परंपरा एवं सांस्कृतिक गतिविधियों की ओर लौटना है। पत्रिका की गौरवशाली परंपरा एवं दुर्लभ विशेषांक के लिए आपको व आपकी टीम को बहुत–बहुत बधाई व शुभकामनाएं।

– **कैलाश चतुर्वेदी,** कासगंज

000

सितंबर माह के अंक में चतुर्वेदी कवियों का कविता विशेषांक "काव्य मणिका" संग्रहणी है। इससे हमारे समाज की बौद्धिक क्षमता के दर्शन होते हैं। चतुर्वेदी समाज वैसे तो हर क्षेत्र में अग्रणी है, लेकिन शिक्षा, साहित्य, कविता,दर्शन व अध्ययन–अध्यापन क्षेत्रों में विशेष रूचि रखता है। डॉ. प्रदीप जी के कुशल नेतृत्व में इस अंक के लिए अतिथि संपादक द्वय डॉ. कुश चतुर्वेदी (इटावा) व भरत चतुर्वेदी (रिषड़ा) व हमारे नव ऊर्जा से ओतप्रोत संपादक शशांक चतुर्वेदी (भोपाल) की तिकड़ी ने मिलकर एक अविस्मरणीय कार्य करके दिखाया। इससे समाज की संपादक जी से अपेक्षायें बढ़ गयी है। समाज एक लंबे समय से इस तरह के अंक की प्रतीक्षा में था। विगत लगभग 5 दशक पूर्व सतीशजी (आगरा) के मार्गदर्शन में इस तरह के विशेषांक का प्रकाशन हुआ था। काव्य के क्षेत्र हमारी गौरवशाली धरोहर, स्वर्णिम वर्तमान के हांथों में सुरक्षित है व हमारे युवाओं की ऊर्जा में भविष्य उज्ज्वल है।

– **मनीष चतुर्वेदी,** गाजियाबाद

देवी आराधना का पर्व : नवरात्र

- आशा चतुर्वेदी, काशगंज

नवरात्र के नौ दिनों को तीन भागों में बांटा गया है। जानकारों के अनुसार पहले तीन दिनों में तमस को जीतने की साधना, अगले तीन दिन रजस और आखिरी तीन दिन सत्व को जीतने की साधना माने गए हैं। नवरात्र पर्व का आध्यात्मिक, धार्मिक और सामाजिक महत्व है। अध्यात्म के रूप में नवरात्र पर्व की विशेष मान्यता है। माना जाता है कि नवरात्र में किए गए प्रयास, शुभ संकल्प बल के सहारे देवी दुर्गा की कृपा से सफल होते हैं। इस पर्व के आते-आते वर्षा ऋतु क्षीण हो जाती है और धीरे-धीरे शीत ऋतु का आभास होने लगता है। इस तरह यह पर्व ऋतु परिवर्तन को भी दर्शाता है।

मार्कंडेय पुराण के अनुसार देवी महात्म्य में दुर्गा ने स्वयं को शाकंभरी अर्थात साग – सब्जियों से विश्व का पालन करने वाली बताया है। देवी का एक और नाम कूष्मांडा भी है। इससे स्पष्ट है कि मां दुर्गा का संबंध वनस्पतियों से भी प्रतीकात्मक रूप से जुड़ा है। दुर्गा पूजा का मूल महत्व मातृशक्ति की पूजा है। शक्ति में सृजन की जो क्षमता होती है। उसी की हम पूजा करते हैं। शक्ति का सही रूप सृजन धर्म है। प्रकृति अपने नारी रूप में जगत को धारण करती है, उसका पालन करती है और शक्ति रूप में संतुलन बिगड़ने पर विध्वंसकारी शक्तियों का विनाश कर सार्थक शक्ति का संचार करती है।

नव दुर्गा नवरात्रि के विशेष दिन

1. नवरात्रि के पहले दिन : शैलपुत्री
2. नवरात्रि के दूसरे दिनः ब्रहचारिणी
3. नवरात्रि के तीसरे दिनः चंद्रघंटा
4. नवरात्रि के चौथे दिनः कुष्मांडा
5. नवरात्रि के पांचवें दिनः स्कन्दमाता
6. नवरात्रि के छठे दिन : कात्यायनी
7. नवरात्रि के सातवें दिनः कालरात्री
8. नवरात्रि के आठवें दिनः महागौरी
9. नवरात्रि के नौवें दिनः सिद्धिदात्री

1. शैलपुत्री

मानव मन पर अधिपत्य रखती पहली दुर्गा चंद्र स्वरूपा देवी शैलपुत्री शाश्वत जीवन में ये स्वरुप है। उस नवजात शिशु का, जो अबोध है, निष्पाप है। जिसका मन निर्मल है।

उपायः मनोविकार से मुक्ति के लिए मां शैलपुत्री को सफेद कनेर के फूल चढ़ाएं।

2. ब्रह्मचारिणी

तामसिक इंद्रियों पर विजय प्राप्त करती दूसरी दुर्गा मंगल स्वरूपा देवी ब्रह्मचारिणी शाश्वत जीवन में ये स्वरुप है। उस बच्चे का जो अब बड़ा हो रहा है, विद्यार्थी है और जिसका जीवन ही ज्ञान स्वरूप है।

उपायः शक्ति प्राप्ति के लिए मां ब्रह्मचारिणी को सिंदूर का चोला चढ़ाएं।

3. चन्द्रघण्टा

कामेंद्रिय को वश में रखती तीसरी दुर्गा शुक्र स्वरूपा देवी चन्द्रघण्टा शाश्वत जीवन में ये स्वरुप उस नवयोवना का है। जिसमें प्रेम का भाव जागृत है तथा जो व्यस्क की श्रेणी में आ गया है।

उपायः प्रेम में सफलता के लिए मां चन्द्रघण्टा को चमेली का इत्र चढ़ाएं।

4. कूष्मांडा

जीवनी शक्ति का संचरण करती चौथी दुर्गा सूर्य स्वरूपा देवी कूष्मांडा शाश्वत जीवन में ये स्वरुप उस विवाहित स्त्री और पुरुष का है। जिसके गर्भ में नवजीवन पनप रहा है अर्थात जो अपनी गर्भावस्था में है।

उपायः संतति सुख कि प्राप्ति के लिए मां कूष्मांडा पर जायफल चढ़ाएं।

5. स्कंदमाता

पालन शक्ति का संचरण करती पांचवीं दुर्गा बुद्ध स्वरूपा

देवी स्कंदमाता शाश्वत जीवन में ये स्वरुप उस महिला अथवा पुरुष का है जो माता-पिता बनकर अपने बच्चों का लालन-पोषण करते हैं।

उपायः संतान कि सफलता के लिए स्कंदमाता पर मेहंदी चढ़ाएं।

6. कात्यायनी

पारिवारिक जीवन का निर्वाहन करती षष्टम दुर्गा बृहस्पति रूपा देवी कात्यायनी शाश्वत जीवन में ये स्वरुप उस अधेड़ महिला या पुरुष का है जो परिवार में रहकर अपनी पीढ़ी का भविष्य संवार रहे हैं।

उपायः पारिवारिक सुख-शांति के लिए माँ कात्यायनी पर साबुत हल्दी कि गाठें चढ़ाएं।

7. कालरात्रि

वृद्धावस्था का अनुभव लिए सप्तम दुर्गा शनि स्वरूपा देवी कालरात्रि शाश्वत जीवन में ये स्वरुप उस वृद्ध महिला अथवा पुरुष का है जो पौत्रों-पौत्री के सुख के लिए जी रहा है और काल (मृत्यु) से लड़ रहा है।

उपायः मृत्यु भय से मुक्ति के लिए माँ कालरात्रि पर काले चने का भोग लगाएं।

8. महागौरी

मृतावस्था का चोला पहने अष्टम दुर्गा राहू स्वरूपा देवी महागौरी शाश्वत जीवन में ये स्वरुप उस मरणासन्न प्राप्त उस वयोवृद्ध महिला या पुरुष का है जिसका अंत सन्निकट है।

उपायः सद्गति कि प्राप्ति के लिए मां महागौरी पर सौंठ चढ़ाएं।

9. सिद्धिदात्री

सिद्धार्थ प्राप्त पंच महाभूत में विलीन नवम दुर्गा केतु स्वरूपा सिद्धिदात्री शाश्वत जीवन में ये स्वरुप उस देह त्याग कर चुकी उस आत्मा का है जिसने जीवन में सर्व सिद्धि प्राप्त करके स्वयं को परमेश्वर में विलीन कर लिया है।

उपायः मोक्ष कि प्राप्ति के लिए मां सिद्धिदात्री पर केले का भोग लगाएं।

कन्या के नाम

कन्या भोज के लिए जिन नौ बच्चियों को बुलाया जाता है। उन्हें मां दुर्गा के नौ रूप मानकर ही पूजा की जाती है। कथाओं में कन्याओं की उम्र के अनुसार उनके नाम भी दिए गए हैं। दो वर्ष की कन्या को कन्या कुमारी, तीन साल की कन्या को त्रिमूर्ति, चार साल की कन्या को कल्याणी, पांच साल की कन्या को रोहिणी, छह साल की कन्या को कालिका, सात साल की कन्या को चंडिका, आठ साल की कन्या को शाम्भवी, नौ साल की कन्या को दूर्गा और 10 साल की कन्या को सुभद्रा का स्वरूप माना जाता है। एक बालक को भी भोज कराना अनिवार्य है। प्रातः काल स्नान करके प्रसाद में खीर, पूरी, और हलवा आदि तैयार करना चाहिए। इसके बाद कन्याओं को बुलाकर शुद्ध जल से उनके पांव धोने चाहिए। कन्याओं के पांव धुलने के बाद उन्हें साफ आसन पर बैठाना चाहिए कन्याओं को भोजन परोसने से पहले मां दुर्गा का भोग लगाना चाहिए और फिर इसके बाद प्रसाद स्वरूप में कन्याओं को उसे खिलाना चाहिए। नौ कन्याओं के एक साथ एक छोटे बालक को भी भोज कराने का प्रचलन है। बालक भैरव बाबा का स्वरूप या लंगूर कहा जाता है। कन्याओं को भरपेट भोजन कराने के बाद उन्हें टीका लगाएं और कलाई पर रक्षा बांधे। कन्याओं को विदा करते वक्त अनाज, रुपया या वस्त्र भेंट करें और उनके पैर छूकर आशीर्वाद प्राप्त करें।

हर उम्र की कन्या का है अलग रूप : नवरात्र के दौरान सभी दिन एक कन्या का पूजन होता है, जबकि अष्टमी और नवमी पर नौ कन्याओं का पूजन किया जाता है।

दो वर्ष की कन्या का पूजन करने से घर में दुख और दरिद्रता दूर हो जाती है। तीन वर्ष की कन्या त्रिमूर्ति का रूप मानी गई हैं। त्रिमूर्ति के पूजन से घर में धन-धान्य की भरमार रहती है, वहीं परिवार में सुख और समृद्धि जरूर रहती है। चार साल की कन्या को कल्याणी माना गया है। इनकी पूजा से परिवार का कल्याण होता है, वहीं पांच वर्ष की कन्या रोहिणी होती हैं।रोहिणी का पूजन करने से व्यक्ति रोगमुक्त रहता है। छह साल की कन्या को कालिका रूप माना गया है। कालिका रूप से विजय, विद्या और राजयोग मिलता है। साल की कन्या चंडिका होती है। इस रूप को पूजने से घर में ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। 8 वर्ष की कन्याएं शाम्भवी कहलाती हैं। इनको पूजने से सारे विवाद में विजयी मिलती है। 9 साल की की कन्याएं दुर्गा का रूप होती हैं। इनका पूजन करने से शत्रुओं का नाश हो जाता है और असाध्य कार्य भी पूरे हो जाते हैं। दस साल की कन्या सुभद्रा कहलाती हैं। सुभद्रा अपने भक्तों के सारे मनोरथ पूरा करती हैं।

कोरोना काल में इस तरह कर सकते हैं पूजन : इस बार भी कोरोना के बीच कन्या पूजन किया जाएगा। अगर आप बाहर से कन्याओं को अपने घर में आमंत्रित नहीं करना चाहते तो घर की बेटी-भतीजी और अन्य कन्याओं को भोजन करवाना चाहिए। कन्याओं को भोजन कराएं और जो भी भेंट देना हो,उसे देवी भाव से भेंट करें। अगर घर में कन्या नहीं है तो माता को ध्यान में करते हुए कुछ हिस्सा गाय को खिला दें।

उपनयन संस्कार

- डॉ. सहदेव कृष्ण चतुर्वेदी,
साहित्याचार्य, मथुरा

मानवीय जीवन का संबंध ऋषियों के साथ, पितरों के साथ, देव शक्तियों के साथ रहता है। उन्हीं की शक्तियों से मानव विद्वान, सम्पन्न और संतानवान होकर सृष्टि का विस्तार करता है। हम जिसे चतुर्विध पुरुषार्थ कहते हैं और जिसमें धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सफलता मिलती है। वह इन्हीं देव, ऋषि और पितृ शक्तियों पर निर्भर रहता है। उन्हीं के संवर्धन के लिए यज्ञों का विधान किया गया है। जिनके 21 प्रकार माने गए है अर्थात 21 प्रकार के यज्ञ करने से देव, ऋषि एवं पितरों की शक्ति बढ़ती है। किन्तु इन सभी यज्ञों को करने से पूर्व यज्ञकर्ता को संस्कार संपन्न होने की आवश्यकता होती है, क्योंकि इन्हीं सभी के द्वारा वह व्यक्ति जहां यज्ञ करने का अधिकारी होता है। वहीं ब्रह्म प्राप्ति के योग्य शरीर का निर्माण भी करता है। माता-पिता के रजोवीर्यगत दोष के कारण संतान में शारीरिक और मानसिक बहुत सी त्रुटियां रह जाती है। जिन्हें संस्कार के माध्यम से दूर किया जाता है। मनुजी महाराज ने कहा हैः

गार्भेर्होमैर्जातकर्म, चौड़ मोञ्ज निबन्धनैः।
बैजिकं गार्भिकं चैनो द्विजानामपमृज्यते॥

अब ये संस्कार कितने होते हैं। इसमें अलग-अलग मत प्राप्त है। गौतम धर्म सूत्र में इनकी संख्या 40 बताई गई है, जो इस प्रकार है ::

1. गर्भाधान 2.पुंसवन, 3. सीमान्तोन्नयन, 4. जातकर्म, 5. नामकरण, 6. अन्नाप्राशन 7 चूड़ाकर्म, 8. उपनयन 9-12. व्रतबन्ध 13. समावर्तन 14. विवाह 15. देवयज्ञ 16. पित्रवज्ञ, 17. अतिथियज्ञ, 18, भूतवज्ञ 19. ब्रह्मयज्ञ 20 श्रावणी कर्म, 21. अश्वनी कर्म 22. आग्रहायणी कर्म 23 चैत्र कर्म, 24, अग्न्याधान, 25. नित्याग्निक्षेत्र, 26. दर्षपौर्णमासया, 27. चातुर्मासयाम वैखदेव, वरुण प्रघास शाकमेघ, शुनासीरीय, 28. आग्रहयणेष्टि (नवान्नेष्टि) 29. निरुढ़पशुयाग 30. सौत्रामणीयाग (सप्तहर्वियाग) 31. अग्निष्टोम 32.अत्यगिनष्टोम 33. उवथ्य, 34. षोडषी, 35, वाजपेय, 36. अतिराम, 37. आप्तोर्याम (सात सोमयाग) 38. पितृमेघ (पिण्ड पितृ याग), 39. अष्टका श्राद्ध 40 पार्णव श्राद्ध।

इन 40 संस्कारों के अतिरिक्त 8 गुणों को प्राप्त करने का यंत्र भी उल्लिखित हैः दया, शांति, अनसूया, शौच, अनायास, मंगल, अकार्पण्य एवं अस्पृहा। तंत्रशास्त्र में यह स्पष्ट किया गया है कि आत्मा को जीवत्व में अथवा पशुत्व में बदलने वाले काम, क्रोध, मद, मोह, मात्सर्य, पैशुन्य और असूया नामक आठ शक्तियां है। ये आत्म शक्ति को संकुचित कर देती है। जीव इसी से अल्प शक्ति वाला हो जाता है। जीवत्व में परिवर्तित करने के कारण इन्हें लोकमाता कहा जाता है। इन्हीं शक्तियों से अबद्ध होने के कारण जीव पशु वाला होता है, ये ही पशु कहलाते हैं। पतु भाव का उत्सर्ग करने के लिए वेदों में पशुवैध का वर्णन है। वहीं तंत्र में पशु बलि का विधान है। पशुबलि व पशुमेघ से तात्पर्य इसीलिए पशुवृत्ति के रूपांतर से है न कि पशुओं का वध करने से। संस्कार द्वारा इन पशु शक्तियों को रूपांतरित किया जाता है। जिससे वे उपरिकथित आठ गुणों में परिवर्तित हो जाते हैं।

इस प्रकार गौतम धर्म सूत्र में 40-48 संस्कार माने गए हैं। वहीं महर्षि सुमंत तथा अंगिरा ने संस्कारों की संख्या 25 मानी है किंतु वेदव्यास ने अपने स्मृति ग्रंथ में 16 संस्कारों का उल्लेख किया है, जो इस प्रकार हैः

1. गर्भाधान 2. पुंसवन, 3. सीमन्तोन्नयन 4.जातकर्म 5. नामकरण, 6. निष्क्रमण, 7. अन्नप्राशन, 8. चूड़ाकर्म, 9. कर्णवेध, 10. उपनयन 11. वेदारंभ 12. केशान्त, 13 समावर्तन 14 विवाह 15. आवसध्याधान तथा 16 श्रोताधन वहीं ब्राह्मण विशेषकर चतुर्वेदियों में वर्तमान में उपरोक्त 16 सोलह संस्कार प्रचलित हैं। इनमें भी अधिकांश लुप्त हो रहे हैं। विवाह के समय ही उपनयन संस्कार संपन्न होने लगा है। जिसमें पीछे के गर्भाधान से चूझकर्म तक के तथा उपनयन के साथ बाद के वेदारंभ, केशान्त एवं समावर्तन संस्कार एक साथ संपन्न हो रहे हैं। वह भी अल्प समय में। उपनयन संस्कार कोई साधारण संस्कार नहीं है, मनु स्मृतिकार ने कहा है

उपनीत फलं चैतद द्विजतां सिद्धि पूर्विका।
वेदाधीत्यधिकारस्य सिद्धिऋषिभिरीरिता ॥

अर्थात इस संस्कार के द्वारा बालक ब्राह्मण की श्रेणी में आ जाता है तथा उसे वेद के अध्ययन का अधिकार भी प्राप्त हो जाता है। उप अर्थात पास में नयन माने ले जाना। बटुक को यज्ञोपवीत धारण कराके आचार्य के पास (गुरू के पास ले जाना उपनयन कहलाता है। यज्ञोपवीत धारण करने से करोड़ों जन्मों के ज्ञात अज्ञात पाप नष्ट होते हैं :

कोटि जन्मार्जित पापं ज्ञानाज्ञान कृतं च यत।

यज्ञोपवीतमात्रेण पलायन्ते न संशयः ॥

यज्ञोपवीत का निर्माण नव तंतुओं से होता है, जिसमें प्रथम तंतु में ओंकार, द्वितीय में अग्नि, तृतीय में नाग, चतुर्थ में सोम, पंचम में पितृ, षष्ठ में प्रजापति, सप्तम में वायु, अष्टम में सूर्य एवं नवम में विश्वेदेवा निवास करते हैं। इसका सूत्र ब्रह्मा द्वारा विनिर्मित किया गया, विष्णु द्वारा त्रिगुणित किया गया तथा रुद्र के द्वारा इसकी ग्रंथि प्रदान की गईः

ब्रह्मणोत्पावितं सूत्रं विष्णुना त्रिगुणी कृतम ।

रुद्रेण तु कृते ग्रंथिः साकिया चाभिमंत्रितं!

अर्थात इसकी ग्रंथियों में ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव भगवान का वास होता है। अतः ऐसा यज्ञोपवीत की पवित्रता सदैव रखनी चाहिए। उपनयन अर्थात यज्ञोपवीत किस आयु में किया जाए इसमें भी मतान्तर है, अश्वलायन ग्रह्मसूत्र में ब्राह्मण बालक के लिए जहां आठ वर्ष की आयु का उल्लेख है। वहीं मनुस्मृतिकार पांच वर्ष की आयु में यज्ञोपवीत करने का निर्देश देते हैं। अधिक तम आयु 16 वर्ष के ऊपर को अग्रहा माना गया है।

ब्राह्मण को द्विज नाम से सम्बोधित किया जाता है। द्विज माने जिसका दूसरा जन्म इसी योनि में हुआ हो जो दूसरा जन्म लेता है। अतः उसे द्विज कहा गया है। द्विज को ही वेद के अध्ययन का अधिकार प्राप्त होता है। स्पष्ट है कि बिना यज्ञोपवीत धारण के वेद भी नहीं पढ़ा जा सकता। अतः यज्ञोपवीत धारण करके ही आचार्य के गुरुकुल में प्रवेश कराया जाता था जहाँ 12 से 15 वर्षों तक गुरुकुल में ब्रह्मचर्य व्रत धारण करके शिक्षा ग्रहण कर बालक अपना सर्वांगीण विकास करता था। गुरुकुल के कड़े नियमों में शहद, मांस, इत्र, सुगंध, पुष्पमाला, रस, स्त्रियों का संग या स्पर्श, बासा अन्न, प्राणियों एवं जीव जंतुओं को मारना, शरीर में मर्दन, आंखों में सुरमा, जूता – छाता धारण करना, काम-क्रोध, नाचना, गाना बजाना, जुआ चौपड़ खेलना, किसी की निंदा-स्तुति करना, बहुत बकना, झूठ बोलना, वृक्ष पर चढ़ना, नदी में तैरना, कूप में झांकना एवं दिन में शयन करना सख्त मना था। इन नियमों का पालन अनिवार्य था। इन नियमों के पालन तथा गुरुगुल में सभी प्रकार की शिक्षा को प्राप्तकर बालक का सर्वांगीण विकास होता था। दैदीप्यमान व्यक्तित्व का धनी बन वह समावर्तन के बाद गृहस्थाश्रम में प्रवेश करता था। वर्तमान में जहां प्रायः सभी संस्कार तो हो रहे हैं या संकुचित हो रहे हैं, ब्रह्म आडम्बर प्रधानता ले रहे है। समय रहते विचार कर आडम्बर का त्याग कर संस्कार को प्रमुखता देनी होगी अन्यथा ये संस्कार पुस्तकों में वर्णित कहानी के रूप में रह जाएंगे।

यज्ञोपवीत कब बदलें ::

यज्ञोपवीत कमर के नीचे नहीं पहनना चाहिए, अर्थात कमर के ऊपर तक ही रहना चाहिए। निम्न अवस्था में खण्डित हो जाता।

1. कंधे से सरक कर बांये हाथ के नीचे आ जाए।
2. कोई धागा टूट जाए।
3. शौचादि के समय कान पर रखना भूल जाएं।
4. चार माहव्यतीत होने पर।
5. उपाकर्म- श्रावणी पर।
6. जननाशौच एवं मरणाशौच में।
7. श्राध्द के समय।
8. यज्ञ में।
9. सूर्य ग्रहण के बाद।
10. चंद्र के बाद।

एक अनुतरित प्रश्न

- डॉ. ऋषभ चतुर्वेदी, देहरादून

मैनपुरी चौबों का एक महत्वपूर्ण गढ़। चौथियाना मोहल्ले में मेरी दो बुआओं के घर है। बड़े फूफाजी, मुनमुनिया जी क्रिशयन कालेज में प्राध्यापक थे। मेरा और परिवार का अक्सर आगरा से वहाँ जाना होता था। घर के बाहर बडा.लम्बा चबूतरा, छोटी मठिया और कुँआ। यह चबूतरा शाम को किसी बड़े ड्राइंग रूम का धर्म अदा करता था। खूब रौनक हो जाती थी। रात लगभग 9 बजे तक बजरिया से आने जाने वाला लगभग हर व्यक्ति जिनमें अधिकतर चौबे ही हुआ करते थे, वहाँ रुक कर, थोड़ी देर बैठकर ही आगे बढ़ता था। आते ही रज्जू कक्का कुयें में से लोटे में पानी खींचकर पिलाकर उसका सत्कार करते थे। देश दुनिया के विभिन्न विषयों पर अनवरत चर्चायें चलती रहती थीं। ज्ञान वर्धक तो होती हीं थी, मनोरंजक भी होती थीं।

एक दिन का प्रसंग मुझे अक्सर याद आ जाता है। भाई भुवन (वकील साहब) वहां पहुंचे और चर्चा में उन्होंने एक प्रश्न सबके सामने रखाः- काये साहब, एक बात बताओ। पहले जमाने लोग इतने ताकतबर होत हते कि एक एक आदमी चार-चार, छः-छः लोगन कों उठाय के फेंक देत हो। तो साहब जो आदमी फिकत है वे किस जमाने के होते थे। मेरे लिये यह रोचक प्रश्न आज भी अनुत्तरित है।

निवेदन

सजातीय बान्धवों को एक सांकेतिक सहयोग राशि , श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा द्वारा समाजहित की योजनाओं जैसे अन्नपूर्णा एवं छात्रवृत्ति आदि के अंतर्गत प्रदान की जा रही है।

अन्नपूर्णा योजना के अंतर्गत वर्तमान सभापति डॉ. प्रदीप जी, द्वारा सम्पूर्ण समाज से अधिक से अधिक शीघ्र सहयोग की अपील की गई है। वर्तमान में 37 लाभार्थी परिवारों को यह सहायता त्रैमासिक January , April , July तथा October के प्रथम सप्ताह सीधे उनके बैंक खाते transfer की जा रही है। *प्रत्येक परिवार क़ो अन्नपूर्णा योजना के अंतर्गत वार्षिक 24000 रुपए भेजे जाते है ।

आप सभी से इस पुण्य कार्य में सहयोग की अपेक्षा है।

इस सहायता योजना के लिए वार्षिक सहयोग राशि 9 लाख रुपए अनुमानित है । आप से अनुरोध है कि 6 माह के लिए 12000 रुपए या वार्षिक 24000 रुपए की राशि का सहयोग करने की कृपा करें।

अभी तक समाज के निम्नांकित सम्मानित बान्धवों ने अन्नपूर्णा सहायता राशि इस वित्तीय वर्ष में अपना अमूल्य योगदान किया है :-

1. SCP मेमोरीयल एजुकेशन ट्रस्ट - 10000/-
2. श्री स्वयंभू चतुर्वेदी बंगलोर - 12000/-
३. श्री असीम चतुर्वेदी अलीगढ़ - 12000/-
4. श्री जयंत कुमार चतुर्वेदी लखनऊ (75वें जन्मदिन पर) - 7575 /-
5. श्री मनोज चतुर्वेदी बैंगलोर - 12000/-
6. SCP MEMORIAL EDUCATION ट्रस्ट - 10000/-
7. सुश्री शिवानी चतुर्वेदी बैंगलोर - 24000/-
8. श्री आनंद श्री भास्कर एवं सुश्री जूही चतुर्वेदी - 12000/-

8 अ . श्री अनुज चतुर्वेदी दिल्ली -12000/-

9. श्री अविनाश जी, कानपुर - 12000/-
10. श्री जे. पी. चतुर्वेदी - 5100/-
12. सुश्री ममता चतुर्वेदी - 2100/-
12. डॉ. श्रीमती प्रीति मिश्रा बीकानेर - 5000/-
१३. श्रीमती कुमुद चतुर्वेदी - 50,000/-
14. श्री प्रतीक पांडे, नॉएडा - 12000/-
15. कैप्टन अनिल चौबे, गुड़गाँव - 12000/-
16. SCP Memorial Education ट्रस्ट - 10000/-
17. श्री मनोज चतुर्वेदी, सागर - 2000/-
18. श्रीमती आरती चतुर्वेदी, लखनऊ - 12000/-
19. गुप्त सहायोग - 24000/-
20. स्व. श्री प्रभात चतुर्वेदी की स्मृति में श्री विकास चतुर्वेदी,कानपुर द्वारा -12000/-
21. बाबू श्री ओंकार नाथ जी स्मृति में श्री विकास चतुर्वेदी,कानपुर द्वारा -12000/-
22. श्री निशीथ चतुर्वेदी USA - 5100/-
२३. SCP मेमोरीयल एजुकेशन ट्रस्ट -10000/-
24. एड. सुभांग सौरभ चतुर्वेदी (लखनऊ) -2100/-
25. श्री पीयूष चतुर्वेदी (कमतरी/ बैंगलोर) - 12000/
26. श्री संजय मिश्रा (कानपुर) - 2100/-
27. श्री मनीष चतुर्वेदी (ग्वालियर) ने स्व. मुरलीधर चतुर्वेदी (ग्वालियर) की स्मृति में 12000/-
28. सुश्री सौम्या (सुपुत्री) श्रीलंका , श्री कौस्तभ तथा श्री सुमेध (सुपुत्रों) USA से। पिता श्री गणेश जी चतुर्वेदी लखनऊ के जन्मदिन के उपलक्ष्य में 12000/-

वित्तीय वर्ष 2021-22 अब तक प्राप्त सहयोग राशि का कुल योग -

रु 3,37.075/-

सभी को विनम्रतापूर्वक आभार

सहयोग राशि भेजने के लिए :-

महासभा खाता विवरणः

Shri Mathur Chaturvedi Mahasabha
Saving A/C no.1006238340
ifs code- cbin0283533
Central bank of india
Branch- Anand vihar delhi

*सहायतार्थ राशि के हस्तांतरण की सूचना के साथ ई-मेल आई डी तथा दूरभाष की जानकारी देने की भी कृपा करें।

मुनींद्र नाथ चतुर्वेदी, मंत्री
श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
Mob. 9871170559

सप्तऋषि

- निशीथ चतुर्वेदी, डबरा (म.प्र.)

सनातन धर्म में सप्तऋषियों का अत्यधिक महत्व है किन्तु भिन्न भिन्न स्थानों पर सप्तऋषियों के अलग अलग नामों का उल्लेख है जो भ्रम पैदा करता है और कोई सर्वमान्य नामों की सूची नहीं बन पाती है आइये कुछ सूचियों के बारे में जानने का प्रयास करते हैं।

एक धारणा यह है कि चारों दिशाओं के अलग-अलग सप्तर्षि हैं और इस प्रकार अट्ठाइस ऋषियों के नाम मिल जाते हैं। बल्कि पुराणों में तो मामला इस हद तक खिंच गया है कि चौदह मन्वन्तरों के अलग-अलग सप्तर्षि माने गए हैं और यह संख्या कुल अट्ठानवे तक चली जाती है।

*** वर्तमान 7 वें मन्वन्तर के सप्तऋषि -**

विष्णु पुराण के अनुसार इस मन्वन्तर के सप्तऋषि इस प्रकार हैंः

वशिष्ठकाश्यपो यात्रिर्जमदग्निस्सगौत।
विश्वामित्रभारद्वजौ सप्त सप्तर्षयोभवन।।

अर्थात सातवें मन्वन्तर में सप्तऋषि इस प्रकार हैंः वशिष्ठ, कश्यप, अत्रि, जमदग्नि, गौतम, विश्वामित्र और भारद्वाज।

सनातन धर्म के सर्वाधिक प्रमाणित प्राचीन ग्रंथ वेद माने जाते हैं अतः किसी भी अनिर्णय की स्थिति में वेद को ही आधार माना जा सकता है

*** वेदों के रचयिता सप्तऋषि :**

ऋग्वेद में लगभग एक हजार सूक्त हैं, लगभग दस हजार मन्त्र हैं। चारों वेदों में करीब बीस हजार हैं और इन मन्त्रों के रचयिता कवियों को हम ऋषि कहते हैं। बाकी तीन वेदों के मन्त्रों की तरह ऋग्वेद के मन्त्रों की रचना में भी अनेकानेक ऋषियों का योगदान रहा है।

ये जानना बेहद रोचक होगा कि वेदों में सप्तर्षि तारामण्डल के जिन सात ऋषियों का वर्णन दिया गया है, वे कौन हैं तथा उनका क्या महत्व है।

ऋग्वेद के सूक्त दस मंडलों (कह सकते हैं कि खण्डों) में संग्रहित हैं और इनमें दो से सात यानी छह मंडल ऐसे हैं जिन्हें हम परम्परा से वंशमंडल कहते हैं क्योंकि इनमें छह ऋषिकुलों के ऋषियों के मन्त्र इकट्ठा कर दिए गए हैं। एक बार नाम जान लिए जाएं तो तर्क का सिलसिला आगे बढ़े। मंडल संख्या दो – गृत्समद वंश या ऋषिकुल, तीन-विश्वामित्र, चार-वामदेव, पांच-अत्रि, छह-भारद्वाज, सात-वसिष्ठ।

इस तरह छह नाम तो साफ-साफ मिल जाते हैं। इस नामावली के संदर्भ में दो महत्वपूर्ण सूचनाएं हमारे पाठकों को पता रहनी चाहिए। एक कि इनमे गृत्समद ऋषि ने अपना गोत्र बदलकर शौनक कर लिया था और इसलिए आगे अब इन्हें शौनक कहना इतिहास की दृष्टि से ज्यादा स्वाभाविक रहेगा। दूसरी महत्वपूर्ण सूचना यह है कि इन छह कुलों के अलावा एक और कुल भी था, कण्वकुल जिसके अनेक ऋषियों ने कई पीढ़ी तक मन्त्र रचे और वे सभी मन्त्र ऋग्वेद में हैं।

फिर क्यों नहीं वेदव्यास ने ऋग्वेद के मन्त्रों का संकलन (मौजूदा) तैयार करते समय उनके मन्त्रों को कण्वकुल का एक पृथक वंशमंडल देने का वैसा गौरव नहीं दिया जैसा शेष छह कुलों को दिया? जवाब आसान नहीं। अनुमान ही लगाया जा सकता है कि चूंकि कण्वकुल के अनेक ऋषियों ने अपने मन्त्र कुछ दानदाताओं की प्रशंसा में बना डाले इसलिए वेदव्यास ने इन्हें पसंद न कर, काव्यकर्म के विरूद्ध मानकर, पृथक वंशमंडल का गौरव न दिया हो। कण्वों के इस तरह के मन्त्रों को 'नाराशंसी' कहते हैं और दाता राजाओं की प्रशंसा में होने के कारण ये मंत्र पुराने राजाओं के बारे में हमारी जानकारी बढ़ाने में खासी सहायता करते हैं। पृथक वंशमंडल बेशक न मिला हो, पर कण्वकुल तो है।

तो सात ऋषिकुल सामने आ गए -

1- वसिष्ठ, 2- विश्वामित्र, 3- कण्व, 4- भारद्वाज, 5- अत्रि, 6- वामदेव 7- शौनक।

इनका कालक्रम भी करीब-करीब इसी श्रृंखला में है।

1. वशिष्ठ :

राजा दशरथ के कुलगुरु ऋषि वशिष्ठ को कौन नहीं जानता। ये दशरथ के चारों पुत्रों के गुरु थे। वशिष्ठ के कहने पर दशरथ ने अपने चारों पुत्रों को ऋषि विश्वामित्र के साथ आश्रम में राक्षसों का वध करने के लिए भेज दिया था। कामधेनु गाय के लिए वशिष्ठ और विश्वामित्र में युद्ध भी हुआ था। वशिष्ठ ने राजसत्ता पर अंकुश का विचार दिया तो उन्हीं के कुल के मैत्रावरूण वशिष्ठ ने सरस्वती नदी के किनारे सौ सूक्त एक साथ

रचकर नया इतिहास बनाया।

2. विश्वामित्र :

ऋषि होने के पूर्व विश्वामित्र राजा थे और ऋषि वशिष्ठ से कामधेनु गाय को हड़पने के लिए उन्होंने युद्ध किया था, लेकिन वे हार गए। इस हार ने ही उन्हें घोर तपस्या के लिए प्रेरित किया। विश्वामित्र की तपस्या और मेनका द्वारा उनकी तपस्या भंग करने की कथा जगत प्रसिद्ध है। विश्वामित्र ने अपनी तपस्या के बल पर त्रिशंकु को सशरीर स्वर्ग भेज दिया था। इस तरह ऋषि विश्वामित्र के असंख्य किस्से हैं।

3. कण्व :

माना जाता है इस देश के सबसे महत्वपूर्ण यज्ञ सोमयज्ञ को कण्वों ने व्यवस्थित किया। कण्व वैदिक काल के ऋषि थे। इन्हीं के आश्रम में हस्तिनापुर के राजा दुष्यंत की पत्नी शकुंतला एवं उनके पुत्र भरत का पालन-पोषण हुआ था।

4. भारद्वाज :

वैदिक ऋषियों में भारद्वाज-ऋषि का उच्च स्थान है। भारद्वाज के पिता बृहस्पति और माता ममता थीं। भारद्वाज ऋषि राम के पूर्व हुए थे, लेकिन एक उल्लेख अनुसार उनकी लंबी आयु का पता चलता है कि वनवास के समय श्रीराम इनके आश्रम में गए थे, जो ऐतिहासिक दृष्टि से त्रेता-द्वापर का सन्धिकाल था। माना जाता है कि भरद्वाजों में से एक भारद्वाज विदथ ने दुष्यन्त पुत्र भरत का उत्तराधिकारी बन राजकाज करते हुए मन्त्र रचना जारी रखी।

ऋषि भारद्वाज के पुत्रों में 10 ऋषि ऋग्वेद के मन्त्रदृष्टा हैं और एक पुत्री जिसका नाम 'रात्रि' था, वह भी रात्रि सूक्त की मन्त्रदृष्टा मानी गई हैं। ऋृवेद के छठे मण्डल के द्रष्टा भारद्वाज ऋषि हैं। इस मण्डल में भारद्वाज के 765 मन्त्र हैं। अथर्ववेद में भी भारद्वाज के 23 मन्त्र मिलते हैं। 'भारद्वाज-स्मृति' एवं 'भारद्वाज-संहिता' के रचनाकार भी ऋषि भारद्वाज ही थे। ऋषि भारद्वाज ने 'यन्त्र-सर्वस्व' नामक बृहद् ग्रन्थ की रचना की थी। इस ग्रन्थ का कुछ भाग स्वामी ब्रह्ममुनि ने 'विमान-शास्त्र' के नाम से प्रकाशित कराया है। इस ग्रन्थ में उच्च और निम्न स्तर पर विचरने वाले विमानों के लिए विविध धातुओं के निर्माण का वर्णन मिलता है।

5. अत्रि :

ऋग्वेद के पंचम मण्डल के द्रष्टा महर्षि अत्रि ब्रह्मा के पुत्र, सोम के पिता और कर्दम प्रजापति व देवहूति की पुत्री अनुसूया के पति थे। अत्रि जब बाहर गए थे तब त्रिदेव अनसूया के घर ब्राह्मण के भेष में भिक्षा मांगने लगे और अनुसूया से कहा कि जब आप अपने संपूर्ण वस्त्र उतार देंगी तभी हम भिक्षा स्वीकार करेंगे, तब अनुसूया ने अपने सतित्व के बल पर उक्त तीनों देवों को अबोध बालक बनाकर उन्हें भिक्षा दी। माता अनुसूया ने देवी सीता को पतिव्रत का उपदेश दिया था। अत्रि ऋषि ने इस देश में कृषि के विकास में पृथु और ऋषभ की तरह योगदान दिया था। अत्रि लोग ही सिन्धु पार करके पारस (आज का ईरान) चले गए थे, जहां उन्होंने यज्ञ का प्रचार किया। अत्रियों के कारण ही अग्निपूजकों के धर्म पारसी धर्म का सूत्रपात हुआ। अत्रि ऋषि का आश्रम चित्रकूट में था। मान्यता है कि अत्रि-दम्पति की तपस्या और त्रिदेवों की प्रसन्नता के फलस्वरूप विष्णु के अंश से महायोगी दत्तात्रेय, ब्रह्मा के अंश से चन्द्रमा तथा शंकर के अंश से महामुनि दुर्वासा महर्षि अत्रि एवं देवी अनुसूया के पुत्र रूप में जन्मे। ऋषि अत्रि पर अश्विनीकुमारों की भी कृपा थी।

6. वामदेव :

वामदेव ने इस देश को सामगान (अर्थात संगीत) दिया। वामदेव ऋग्वेद के चतुर्थ मंडल के सूत्तद्रष्टा, गौतम ऋषि के पुत्र तथा जन्मत्रयी के तत्ववेत्ता माने जाते हैं।

7. शौनक :

शौनक ने दस हजार विद्यार्थियों के गुरुकुल को चलाकर कुलपति का विलक्षण सम्मान हासिल किया और किसी भी ऋषि ने ऐसा सम्मान पहली बार हासिल किया। वैदिक आचार्य और ऋषि जो शुनक ऋषि के पुत्र थे ।

*** महाभारत के अनुसार सप्त ऋषि –**

महाभारत में सप्तऋषियों की दो नामावलियां मिलती हैं।

* एक नामावली में कश्यप, अत्रि, भारद्वाज, विश्वामित्र, गौतम, जमदग्नि और वशिष्ठ के नाम आते हैं तो

* दूसरी नामावली में पांच नाम बदल जाते हैं। कश्यप और वशिष्ठ वहीं रहते हैं पर बाकी के बदले मरीचि, अंगिरस, पुलस्त्य, पुलह और क्रतु नाम आ जाते हैं। कुछ पुराणों में कश्यप और मरीचि को एक माना गया है तो कहीं कश्यप और कण्व को पर्यायवाची माना गया है।

*** सप्तऋषि तारामंडल –**

पृथ्वी के उत्तरी गोलार्ध (हेमीस्फ़ेयर) के आकाश में रात्रि में दिखने वाला एक तारामंडल है। इसे फाल्गुन-चैत महीने से श्रावण-भाद्र महीने तक आकाश में सात तारों के समूह के रूप में देखा जा सकता है। इसमें चार तारे चौकोर तथा तीन तिरछी रेखा में रहते हैं। इन तारों को काल्पनिक रेखाओं से मिलाने पर एक प्रश्न चिन्ह का आकार प्रतीत होता है। इन तारों के नाम प्राचीन काल के सात ऋषियों के नाम पर रखे

गए हैं। ये क्रमशः

1- क्रतु, 2- पुलह, 3- पुलस्त्य, 4- अत्रि, 5- अंगिरस, 6- वाशिष्ठ 7- मारीचि हैं।

*** गोत्र परम्परा और सप्तऋषि -**

गोत्र का अर्थ है कि वह कौन से ऋषिकुल का है या उसका जन्म किस ऋषिकुल से सम्बन्धित है । किसी व्यक्ति की वंश-परम्परा जहां से प्रारम्भ होती है, उस वंश का गोत्र भी वहीं से प्रचलित होता गया है। हम सभी जानते हें की हम किसी न किसी ऋषि की ही संतान है, इस प्रकार से जो जिस ऋषि से प्रारम्भ हुआ वह उस ऋषि का वंशज कहा गया । इन गोत्रों के मूल ऋषि –

1- विश्वामित्र, 2- जमदग्नि, 3- भारद्वाज, 4-गौतम, 5- अत्रि, 6-वशिष्ठ, 7- कश्यप

इन सप्तऋषियों और आठवें ऋषि अगस्त्य की संतान गोत्र कहलाती है।

माथुर चतुर्वेदी ब्राह्मणों के गोत्र -

माथुर ब्राह्मणों के गोत्र 7 हैं। ये प्राचीन सप्त ऋषियों की प्रतिष्ठा में उन्हीं के द्वारा स्थापित हुए थे। इनकी ऐतिहासिकता संदेह से परे है। इन सात गोत्रों के गोत्रकार ऋषियों की परम्परा में नाम इस प्रकार हैं।

1-दक्ष गोत्र (अत्रि ऋषि) 2- कुत्स गोत्र (अंगरिस ऋषि) 3- वशिष्ठ गोत्र (वशिष्ठ ऋषि) 4- भार्गव गोत्र 5- भारद्वाज गोत्र 6- धौम्य गोत्र (कश्यप उर्फ मारीचि ऋषि) 7- सौश्रवस गोत्र इसमें भार्गव , भारद्वाज तथा सौश्रवस गोत्र के ऋषि तारामंडल में नहीं दिख रहे वहीं क्रतु , पुलस्त्य और पुलह ऋषि के गोत्र नहीं दिख रहे हैं ।

महान ऋषियों में से कुछ नामों का विवरण -

अ : अंग (ऋषि पुत्र), अंगिरस, अंगिरा, अक्षपाद, अक्षमाला, अक्षोभ्य, अगस्त्य, अजीगर्त, अणीमाण्डव्य, अत्रि, अथर्वा, अदिति, अनंग, अपान्तरतमा, अपोद, अप्सुहोम्य, अरिष्टनेमि (ऋषि), अरुन्धती, अलर्क ऋषि, अष्टावक्र, असित, असित (राजर्षि)

आ : आथर्वण, आश्वलायन, आस्तीक

इ : इन्द्र सावर्णि मनु, इन्द्रोत

ई : ईरि

उ : उग्रतप, उग्रश्रवा, उतथ्य (ऋषि), उत्तंक, उत्तंक (गौतम शिष्य), उत्तंग, उत्तंग (वेद शिष्य), उद्दालक

ऋ : ऋचीक ऋषि, ऋतेयु, ऋभुगण, ऋषि, ऋषिक (राजर्षि), ऋष्यश्रृंग

ए : एकत

औ : औत्तम मनु, औशिज

क : कक्षसेन (ऋषि), कणाद, कण्व, कपिल, करालदन्त, कर्णश्रवा, कर्दम ऋषि, कवष, कश्यप, कहोल, कात्यायन, कात्यायन (गोमिलपुत्र), कात्यायन (वररुचि), कात्यायन (विश्वामित्रवंशीय), कामन्दक, कालकवृक्षीय, कालघट, काश्य ऋषि, काश्यप, किंदम, कुत्स, कृतकाम, कृतचेता, कृतवाक, कृश, कृश ऋषि, कृषीबल, कोपवेग, कोहल, कोहल (उत्तर निवासी ऋषि), कोहल ऋषि, कौणिकुत्स्य,कौण्डिन्य, कौत्स, कौधिक, कौशिक, क्रतु

ग : गरिष्ठ, गाधि, गार्गी, गालव, गृत्समद, गोभिल, गौतम, गौपवन, गौरशिरा

घ : घटजानुक, घोर, घोषा

च : चक्रधनु, चण्डकौशिक, चरक, चर्चीक, चित्रशिखण्डी ऋषि, च्यवन

ज : जमदग्नि, जाबाल, जाबालि, जाबालि (दशरथ के गुरु), जीमूत (महात्मा), जैगीषव्य, जैमिनि

त : तंगण, तनु, तित्तिर (ऋषि), तुम्बुरु, त्रिजट मुनि, त्रित (गौतम पुत्र)

द : दक्ष सावर्णि मनु, दत्तात्रेय, दधीचि, दुर्वासा, देव सावर्णि मनु, देवल

ध : धर्म सावर्णि मनु, धौम्य, धौम्य ऋषि

न : नारद, निश्चल

प : पंचशिख (ऋषि), परशुराम, पराशर, पर्णाद (ऋषि), पुलस्त्य, पुलह, पुलोमा, पृथुश्रवा ऋषि, पैलगग, प्रणक ऋषि, प्रतीची, प्रश्नि ऋषि

फ : फेनप ऋषि

ब : बटुक, बड़वामुख, बलिवाक, बालखिल्य, बालधि, बृहज्ज्योति, बृहत (ऋषि पुत्र),, बृहदब्रह्मा, बृहन्मना, बृहस्पति -आंगिरस, बृहस्पति -कामसूत्र प्रवर्त्तक, बृहस्पति -तार्किक, बृहस्पति -लौक्य, बृहस्पति -वेदविनिन्दक, बृहस्पति ऋषि, ब्रह्म सावर्णि मनु

भ : भरतमुनि, भाण्डायनि, भारद्वाज, भार्गव, भार्गव (परशुराम), भृगु

म: मंकणक मुनि, मतंग, मधुच्छंदा, मनीषी, मनु

मन्दपाल, मरीचि, महाजानु, महाशिरा, मार्कण्डेय, मुंज, मुनि, मौद्गल्य, मौद्गल्य (ऋषि)

य : याज्ञवल्क्य, यायावर (ऋषि), यास्क

र : रुद्र सावर्णि मनु, रैक्व, रैभ्य, रैवत मनु, रोमहर्षण

ल : लोमश ऋषि

व : वत्सनाभ, वदान्य, वसिष्ठ, वाग्भट, वात्स्य,वात्स्यायन, वामदेव, वायुचक्र, वायुबल, वायुभक्ष, वायुमण्डल (ऋषि)

वायुवेग (ऋषि), वायुहा, वाल्मीकि, विद्युत्प्रभ, विपुल, विभु, विश्रवा।

विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर

विश्व हिन्दी सचिवालय

- श्रीमती उषा चतुर्वेदी, भोपाल

हिंदी भाषा के विकास एवं संवर्धन के लिए, हिंदी भाषा को अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप मे स्थापित करने के लिए विश्व हिंदी सम्मेलनों का आयोजन होता है।

यह अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन हिंदी भाषा का सबसे बड़ा सम्मेलन होता है जिसमें विश्व भर के हिंदी विद्वान, साहित्यकार, पत्रकार , भाषा विज्ञानी, विषय विशेषज्ञ तथा हिंदी प्रेमी की उपस्थिति रहती है।

भोपाल में दसबाँविश्व हिंदी सम्मेलन आहूत किया गया था उसकी गरिमायी उपस्थिति तथा भव्यता अपने आप में एक इतिहास थी। 10 मई विश्व हिंदी सम्मेलन में ही 11बे विश्व हिंदी सम्मेलन अतिथि तथा स्थान निर्धारित किया गया था। स्थान था मॉरीशस की राजधानी पोर्टलुई तथा तिथियां थी 18 अगस्त 2018 से 20 अगस्त 2018 तक। विश्व स्तर पर इतने बड़े आयोजन की व्यवस्था करना तथा सभी अन्य व्यवस्थाएं कैसे होती हैं जानने की जिज्ञासा स्वाभाविक है।

सौभाग्य से मुझे 11 में विश्व हिंदी सम्मेलन में मॉरीशस में भागीदारी करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। प्रथम विदेश यात्रा तथा विश्व हिंदी सम्मेलन में भागीदारी एक नया ऊर्जा तथा उत्साह पैदा कर रही थी। मॉरीशस भ्रमण के दौरान विशेष तौर से विश्व हिंदी सचिवालय का भ्रमण मेरे द्वारा किया गया सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त करने हेतु तथा विश्व हिंदी सचिवालय की आज तक की यात्रा का विवरण आपके सामने प्रस्तुत करने का साहस जुटा सकी।

विश्व हिंदी सचिवालय : सन 1975 में नागपुर में प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन आहूत किया गया। सम्मेलन में मॉरीशस के प्रधानमंत्री सर शिव सागर रामगुलाम की गरिमामय उपस्थिति थी। सम्मेलन में प्रधानमंत्री सर रामसागर गुलाम जीने विश्व स्तर पर हिंदी गतिविधियों के समन्वय के लिए एक संस्था की स्थापना का विचार रखा

हिन्दी को प्रतिष्ठा दिलाने का नियमित तथा सुसम्बद्ध तरीके से चले एक ऐसे अर्न्तराष्ट्रीय हिन्दी केन्द्रकी स्थापना होजहाँ भारत के बाहर के देशों में हिन्दी का प्रचार हो उनके विचारों ने एक सभी के मन्तव्य का रूप ले लिया। काफी विचार मंथन चिंतन मनन के बाद भारत तथा मारीशस की सरकारों के बीच

स्थापना की सहमति बनी। तथा दोनों सरकारों के समझौते पर हस्ताक्षर हुए। 20 अगस्त 1999 को समझौते का ज्ञापन बना। 21 नवंबर 2001 को दोनों देशों में समझौता हुआ तथा 12 नवंबर 2002 मॉरीशस विधानसभा में हिंदी सचिवालय अधिनियम पारित हुआ। दिनांक 11 फरवरी 2008 मैं विश्व हिंदी सचिवालय में कार्य करना प्रारंभ कर दिया।

उद्देश्य : सचिवालय का मुख्य उद्देश्य एक अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में हिन्दी का प्रचार तथा हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा बनाने के लिए एक वैश्विक मंच तैयार करना था।

व्यवस्थायें : विश्व हिंदी सचिवालय अधिनियम 2002 की धारा 9 के अनुरूप मॉरीशस सरकार तथा भारत सरकार द्वारा मनोनीत मंत्री गण के अतिरिक्त दोनों देशों की सरकारों द्वारा मनोनीत हिंदी क्षेत्र में ख्यात प्राप्ति दो विद्वान शासी परिषद के सदस्य होते है। शासी परिरषद के सदस्य।

1) स्वर्गीय नरेंद्र कोहली जी

आप लब्ध प्रतिष्ठित साहित्यकार थे जिनका कि सम्मेलन के पश्चात स्वर्गवास हुआ।

2 श्री सत्यदेव टैगर

3 प्रो सत्यवतशास्त्री

4 डॉक्टर उदय नारायणगेगू

सचिवालय की पूरी व्यवस्था का कार्य कार्यकारिणी बोर्ड के अधीन होता है।

दोनों सरकारों के समझौतों के अनुसार प्रथम महासचिव सचिवालय का मॉरीशस का होगा जिसका कार्यकाल 3 वर्ष रहेगा। 29 अगस्त 11:00 में श्रीमती पूनम जुनेजा महासचिव बनी उसके पश्चात 2010 में उप महासचिव डॉ राजेंद्र प्रसाद को महासचिव का अतिरिक्त प्रभार दिया गया।

समझौते के अनुसार प्रमुख सचिव भारत का होगा जो डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद मिश्र जी थे। प्रारम्भ में सचिवालय एक भवन में संचालित होता था। उसका अपना स्वयं का भवन नहीं था। विश्व हिंदी सचिवालय के लिए एक नए भवन का निर्माण कर पुराने सचिवालय को उस में स्थानांतरित कर दिया गया। इस नए भवन का उद्घाटन सन 2018 में भारत के महामहिम राष्ट्रपति कोविद जी ने किया।

नया सचिवालय पुष्पी पौधों और हरे-भरे वृक्षों से घिरा है। बहुत सुंदर स्थान है। सचिवालय के अंदर एक सभागृह एक पुस्तकालय भी है। 11 मई विश्व हिंदी सम्मेलन जो कि मारीशस में हुआ था उसमें यह प्रस्ताव पारित किया गया कि सचिवालय की उप शाखाएं अन्य देशों में हो। विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना सार्थक सिद्ध हुई दोनों देश मिलकर गिरमिटिया देशों में हिंदी भाषा को पुनर्स्थापित करने का कार्य कर रहे हैं।

गिरमिटिया अंग्रेजों ने उन भारतीय मजदूरों को कहा जिन्हें गुलाम बनाकर फिजी गयाना मॉरीशस आज देशों में भेजा जाता था। इनमें सर्वप्रथम 1834 में 36 मजदूर लाए गए थे। यही कारण है कि आज मॉरीशस तथा गिरमिटिया देशों में भारतीय संस्कृति जीवित है।

तथा हिंदू धर्म में उनकी आस्था है। विश्व हिंदी सचिवालय के प्रयासों से संयुक्त राष्ट्र संघ में रेडियो से हिंदी का प्रसारण प्रारंभ हो गया है। साप्ताहिक हिंदी बुलेटिन समाचारों भी प्रारंभ हो गए हैं। 25 से अधिक पत्र पत्रिकाएं विदेशों से प्रकाशित हो रही हैं। चीन जापान बीबीसी रेडियो की इंटरनेशनल हिंदी सेवाएं विशेष रूप से उल्लेखनीय। संयुक्त राष्ट्र संघ हिंदी समाचार बुलेटिन का प्रसारण एक बहुत बड़ी उपलब्धि है।

शारदीय नवरात्र

- **अंजू प्रवीण चतुर्वेदी**, वाराणसी

शारदीय नवरात्र माँ दुर्गा जी की उपासना पर्व है। यह हर साल पावन श्राद्ध खत्म होते ही शुरू होता है। आइये जानते हैं शारदीय नवरात्र का महत्व,और क्या है इसकी पौराणिक कथा-- धर्म ग्रंथ एवम पुराणों के अनुसार ये भगवती दुर्गा जी की आराधना का सर्वश्रेष्ठ समय होता है।नवरात्र के पावन दिनों में हर दिन माँ के अलग अलग स्वरूपों की पूजा की जाती है। जो अपने भक्तों को खुशी और शक्ति प्रदान करती हैं। नवरात्र का हर दिन देवी के विशिष्ट रूप को समर्पित होता है,और हर देवी स्वरूप की कृपा से अलग अलग तरह के मनोरथ पूर्ण होते है। नवरात्र का पर्व शक्ति और उपासना का पर्व है। शास्त्रों में नवरात्र पर्व मनाये जाने की दो पौराणिक कथाएँ है।पहली पौराणिक कथा के अनुसार महिषासुर नाम का एक राक्षस था जो ब्रह्मा जी का बड़ा भक्त था। उसने अपने तप से ब्रह्माजी को प्रसन्न करके एक वरदान प्राप्त कर लिया । कि उसे पृथ्वी पर रहने वाला कोई देव,दानव, या पृथ्वी पर रहने वाला कोई मनुष्य मार न पाए। वरदान प्राप्त करते ही वह बहुत निर्दयी हो गया और तीनों लोकों में आतंक मचाने लगा। उसके आतंक से परेशान होकर देवी देवताओं ने ब्रह्मा, विष्णु ,और महेश के साथ मिलकर माँ शक्ति के रूप में दुर्गा को जन्म दिया। माँ दुर्गा और और महिषासुर के बीच नौ दिनों तक भयंकर युद्ध हुआ और दसवें दिन माँ ने महिषासुर का वध कर दिया,अतः इस दिन को अच्छाई की बुराई पर जीत के रूप में मनाया जाता है।

दूसरी पौराणिक कथा के अनुसार भगवान श्री राम ने लंका पर आक्रमण करने से पहले और रावण के साथ होने वाले युद्ध मे जीत के लिए शक्ति की देवी माँ भगवतीजी की आराधना की थी। रामेश्वरम में उन्होंने नौ दिनों तक माताजी की पूजा की। उनकी भक्ति से प्रसन्न होकर माँ ने श्री राम जी को लंका में विजय का आशीर्वाद दिया। दसवें दिन भगवान राम ने लंका नरेश रावण को युद्ध मे हराकर लंका पर विजय प्राप्त की। इस दिन को विजयादशमी के रूप में मनाया जाता है।

नवरात्र के दिनों में पूजे जाने वाले देवी के नौ स्वरूप है-- पहले दिन माँ शैलपुत्री दूसरे दिन माँ ब्रह्मचारिणी, तीसरे दिन माँ चंद्र घंटा, चौथे दिन माँ कुष्मांडा, पांचवे दिन माँ स्कन्दमाता,छठे दिन माँ कात्यायनी, सातवें दिन माँ कालरात्रि, आठवें दिन माँ महागौरी और नौवें और आखिरी दिन माँ सिद्धिदात्री की पूजा की जाती है। नवरात्र के पहले दिन विधिनुसार घटस्थापना का विधान होता है।

हमारी कल्पना का स्वर्णिम भारत हिंदी के साथ

- बीना मिश्रा, हैदराबाद

भारत के संविधान में 22 भाषाओं को स्वीकृति प्रदान की इनमें हिंदी को राष्ट्रभाषा और राजभाषा का सम्मान प्राप्त है विश्व हिंदी सम्मेलनों की सफलता इसके सर्व भौमिक प्रचार एवं समृद्ध व सशक्त कड़ी है। भूमंडलीकरण किसे भाषाएं भी अछूती नहीं है आर्य समाज में इस आवश्यकता को सबसे पहले समझ लिया था ऐसा लगता है आर्य समाज के लोग जब फीजी मॉरीशस गुयाना आदि देशों में गए तो उनके साथ हिंदी भी वहां पहुंच गई हिंदी को भारत की जन भाषा बनाने का श्रेय बहुत कुछ गांधीजी को है उन्होंने अपने पुत्र देवदास को दक्षिण भारत में हिंदी भाषा के प्रचार के लिए भेजा पंजाब गुजरात महाराष्ट्र बंगाल आंध्र और कर्नाटक तक का हिंदी के प्रति विशिष्ट अवदान रहा है महामन पंडित राहुल सांस्कृत्यायन अपभ्रंश के सुप्रसिद्ध लेखक स्वयंभू को हिंदी का प्रथम ग्रंथ कार तथा उनके ग्रंथ पद्म कैरित्र को हिंदी का प्रथम ग्रंथ माना गया है जबकि स्वयंभू कर्नाटक निवासी पर पंजाब के सिद्ध और नाथपंथी योगियों ने हिंदी के विकास में योगदान दिया जालंधर में जन्मे जालंधर नाथ जिन्हें आदित्यनाथ भी कहा जाता है युग से संबंधित 7 पुस्तकों की रचना की हिंदी में रासो काव्य परंपरा का विशिष्ट स्थान है इस परंपरा के उद्घोषक थे। अब्दुल रहमान इनके द्वारा प्रशस्त मार्ग पर पृथ्वीराज रासो, बीसलदेव रासो हमारी राशि आदि ग्रंथों की रचना हुई पृथ्वीराज रासो के कवि चंद्रवरदाई लाहौर के निवासी थे पंजाब के गुरु तेग बहादुर तथा गुरु गोविंद सिंह ने तो स्वयं हिंदी में लिखा था और साथ ही दरबार में कवियों को संरक्षण भी प्रदान किया था। हिंदी का सर्वाधिक प्राचीन ग्रंथ 1730 इसी में पंजाब के रामप्रसाद जी निरंजनी द्वारा भाषा योग वशिष्ठ के रूप में प्रस्तुत किया था। इस युग के प्रारंभिक दिनों में पंडित वाचस्पति स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती विद्यालंकार जैसे प्रसिद्ध पत्रकार पंजाबी भाषी थे राजर्शी पुरुषोत्तम दास टंडन भी पंजाबी भाषी थे जिन्होंने हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में संविधान में स्थान दिलाने के लिए सशक्त आवाज उठाई थी। जामनगर में जन्मे स्वामी प्राणनाथ ने हिंदी में पदावली लिखी और कुरान का हिंदी में अनुवाद किया गुजरात के अन्य कवियों में गोपाल दास मुकुंद दास कृष्णदास प्रीतम दास बिहारी दास निर्मल दास महात्मा गांधी आदि ने हिंदी में रचनाएं कर हिंदी को गौरव प्रदान किया। हिंदी के वर्तमान स्वरूप को खड़ी बोली का नाम गुजरात के लल्लू लाल जी नहीं दिया स्वामी दयानंद सरस्वती ने अपना अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश हिंदी में ही लिखा इसी समृद्ध परंपरा के वाहक महाराष्ट्र के ज्ञानेश्वर मुक्ताबाई दामोदर पंडित चक्रधर नामदेव कवित्री उप आंबा आदि के नाम उल्लेखनीय ज्ञानेश्वर ने निर्गुण भक्ति धारा का प्रचार प्रसार हिंदी में किया संत नामदेव जी 19वीं शताब्दी में हुए उन्होंने पद साखी दोहे भजन आदि से हिंदी के भंडार को भरा दक्षिण भारतीय भाषाओं में मराठी की लिपि देवनागरी लिपि के सन्निकट होने से हिंदी शिक्षण में इसका इनका उन क्षेत्रों में प्रबल योगदान हैं आधुनिक युग में मराठी रचनाकारों में जिनमें सर्व श्री माधवराव सुशीला बाबूराव विष्णु पराड़कर लक्ष्मी नारायण गधे सिद्धनाथ माधव आगरकर रघुनाथ कृष्ण खंडित कर आदि हिंदी जगत के प्रसिद्ध पत्रकार थे हिंदी के प्रख्यात साहित्यकार प्रभाकर मच्वे जन्मना मराठी थे। हिंदी साहित्य के भक्ति काल की सगुण निर्गुण भक्ति धारा दक्षिण से वही उत्तर भारत में भक्ति काव्य की गंगा प्रवाहित करने वाले दक्षिण के ही अलंकार संत थे सूरदास को काव्य रचना की प्रेरणा महाप्रभु वल्लभाचार्य से मिली जो कि आंध्र निवासी थे आंध्र प्रदेश के कवियों में रीति काल के प्रसिद्ध कवि पद्माकर विशिष्ट स्थान रखते हैं आधुनिक पद और गधे को तथा पत्रकार जगत को आंध्र के अनेक ख्याति प्राप्त रचनाकार हिंदी में ही दिए हैं हिंदी भाषा को 13वीं/14वीं सभी में वर्तमान स्वरूप प्रकट होने लगा था।

खड़ी बोली – अवधी ब्रज भाषा का अस्तित्व परिचय मिलने लगा था मुसलमान कवियों में क़ुतुब जायसी उस्मान शेख नबी नूर मोहम्मद आदि ने अवधी भाषा में रचनाएं प्रस्तुत की अमीर खुसरो का नाम हिंदी विकास में श्रद्धा से लिया जाता है। हिंदी के प्रथम दैनिक समाचार पत्र उदंत मार्तंड का प्रकाशन कोलकाता से हुआ वर्तमान में यशस्वी पत्रकार अर्णब गोस्वामी हिंदी में भी पत्रकारिता कर रहे हैं संपूर्ण भारत में हिंदी साहित्य पत्रकारिता फिल्म जगत संचार माध्यमों के प्रिंट मीडिया इलेक्ट्रॉनिक मीडिया व्यापार व्यवसाय योग आदि को जन-जन तक पहुंचाने में आ हिंदी भाषियों की भूमिका सदैव से ही उल्लेखनीय रही है।

इस युग के जाने-माने लेखकों में आगे नागर यशपाल उपेंद्र अश्क धर्मवीर वार्ड भारती किशन चंद्र अमृता प्रीतम राघव राघव कुलदीप नैयर खुशवंत सिंह बालकृष्ण पूर्ण सोम सुंदर नारायण दत्त मुक्तिबोध आदि की लंबी सूची है हिंदी को उसका सहोदर भाषा बहनों ने बहुत ही गौरव अरणीय साहित्यकार प्रशंसनीय पत्रकार फिल्मकार आदि देकर सम्मानित किया है।

'भारत स्वर्ग सदृश्य बने, होवे स्वच्छ प्रशासन,
हर ओर दिखे शुची सुंदर श्रृंगार भरा आंगन।
कली-कली हर ओर महके, सब देव करें अभिनंदन,
हमारा भारत प्राप्त करें विश्व गुरु का आसन।।

अतीत का झरोखा

चतुर्वेदी चंद्रिका क्यों?

- श्री निर्मल चन्द्र चतुर्वेदी, लखनऊ

'चतुर्वेदी चंद्रिका' श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा का मुखपत्र है। चतुर्वेदी समाज अन्य समाजों में सर्वोपरि है। इसमें जन्मी प्रतिभाएं उद्योग, व्यापार, चिकित्सा, प्रशासन इत्यादि सभी विभागों में विद्यमान हैं। जाति के उपकार की बातों को स्पष्ट रूप से सम्पूर्ण समाज तक पहुंचाना मुखपत्र का मूल मंत्र है। मुखपत्र के वर्ष 1969, फरवरी अंक में प्रकाशित यह आलेख आज भी सामयिक है। मूलतः पत्रिका के स्थापना वर्ष 1891 का है किन्तु आज भी सामयिक है।

भ्रातागण! यह माथुर जाति सम्बन्धी एक मासिक पत्रिका है। इसका मुख्य उद्देश्य प्रचलित कुरीतियों का निवारण, विद्या का प्रचार, माथुर जाति का सुधार करना का है। हम देखते हैं कि आजकल इस सर्वोपरि जाति की हीन दशा हो रही है, जिधर दृष्टि की जाती है, उधर सिवाय घटती के कोई चिन्ह दिखाई नहीं देता। जिस प्रकार किसी रोग की दवा न होकर वह दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जाता है, उसी तरह बिना किसी उपाय के हमारी जाति की अवस्था दिन पर दिन शिथिल होती जाती है। इस रोग को दूर करने के लिये यह चंद्रिका औषधि रूप में प्रकाशित हुई है। यह जाति की हीन अवस्था की चिल्लाहट को समस्त बान्धवों के कान पर पहुंचायेगी। जिनको सुनकर हमारे भाईयों का ध्यान अपनी जाति सुधार की ओर अवश्य होगा। यह घोर निद्रा में सोते हुए भाइयों की आंखों पर अपना प्रकाश डालकर उनको कुम्भकर्णी नींद से जगाएगी। जगाने और चंद्रिका के चांदनी में देखने से उनको अवश्य ही मालूम हो जायेगा कि हम कैसी अवस्था में।

जब अपनी अवस्था का ज्ञान होगा तो फिर उसकी भलाई, बुराई के लिये उपाय करने की चिन्ता भी उनके चित में निःसंदेह पैदा होगी। यह बात सर्वथा तय है कि पिहले समय में हमारी जाति सर्वोपरि विद्वान थी। जिसके कारण अब तक भी इस जाति की सबसे अधिक प्रतिष्ठा होती है। पर कुछ काल से यह विद्यारूपी रत्न हमारी जाति से खो गया है। वह खोया हुआ रत्न इसी चंद्रिका के प्रकाश से हमको फिर प्राप्त होगा। यही इस चंद्रिका के प्रकाशित होने का मुख्य उद्देश्य है। फिर अविद्या का राज होने पर योग्य आचारियों की प्रचार की हुई रीतों में बहुत सी ऐसी मूर्खता की रीतों से मेल हो गया है। इसके कारण यह जाति और भी रसातल को चली जा रही है। बुद्धि के भ्रम से बहुतेरे लोग अब तक भी उन बीच की बनी हुई रीतियों को आचारियों की ही बनाई हुई रीतियां समझते हैं और इसी हेतु उसका पीछा न छोड़ने के लिये हठ करते हैं। यह बड़ा भारी भ्रम रूपी तिमिर इसी चंद्रिका के प्रकाश से दूर हो सकेगा।

इसके प्रकाश से उन लोगों को भली भाँति दिखाई पड़ जायेगा कि यह दुष्ट कुरीतियाँ आचारियों की निर्मित की हुई नहीं है बल्कि बीच-बीच में लोगों ने अपनी ओर से मिला दी है। अगले समय से अब तक जो हमारी जाति के आचार-विचारों में धरती आकाश के समान अन्तर आ गया है। उसको भी समस्त भाइयों में स्पष्ट कर दिखाना इस चनद्रिका का काम है। हमारी जाति में आजकल केवल अपना ही स्वार्थ मुख्य गिना जाता है अर्थात जब किसी का काम चला जाता है, वह दूसरे के काम की ओर कुछ भी ध्यान नहीं देता है तथा परोपकार तथा जाति उपकार का कुछ विचार ही नहीं है। जिसके कारण यह जाति और भी दिन पर दिन मिट्टी में मिलती जा रही है। चंद्रिका भली भाँति लोगों को यह बात बताएगी कि एक दूसरे के लिये तथा अपनी जाति के लिये क्या कर्त्तव्य है। फिर एकता जो हमारी जाति का एक मूल अस्त्र है और वह सदा से हमारी जाति में विद्यमान रहा है। पर अब कुछ समय से उसकी भी क्रिया बिगड़ चली है। इसमें सुधार कर एकता में बनाये रखने के उपाय तथा उसके बिगड़ जाने से जो हानियां होती हैं उनको सविस्तार रूप से प्रकाश कर लोगों को जगाना भी चंद्रिका का कार्य समझना चाहिये। इसी प्रकार जाति के उपकार की जितनी बाते हैं, उन सबको स्पष्ट रूप से सम्पूर्ण समाज में प्रकाशित करना इस चंद्रिका का मूल मंत्र है। निःसन्देह यह कार्य हमारी जाति के लिये है। इसी से प्रथम हमारे बहुतेरे भाइयों को अनेक तरह के भ्रम अवश्य उत्पन्न हुये होंगे। पर हमने आज संक्षेप रीति से चंद्रिका सम्बन्धी कुछ थोड़ी सी व मुख्य मुख्य बातों को अपने भाइयों के कान में डाला है। जिससे उनकी शंका का समाधान निकले एवं चंद्रिका के प्रकाशित होने का उद्देश्य भली भाँति मालूम हो सके। हम आशा करते हैं कि अब किसी को इस बात की शंका न रहेगी कि यह चंद्रिका क्यों उदय हुई।

साभारः चतुर्वेदी फरवरी 1969 अंक से

दिव्य ऊर्जा एवं विज्ञान

- ललित चतुर्वेदी, नोयडा

जीवन, प्राण, चेतना ये सभी शब्द हम सभी दिन प्रति दिन चलने वाले कालचक्र में सुनते रहते है। क्या हैं ये शब्द, विचार या विज्ञान। जीव के प्रार्दुभाव की प्रक्रिया के साथ प्रारम्भ तथा मृत्यु के साथ पूर्ण सम्पन्न इस ब्रह्म प्रक्रिया के केन्द्र में एक चेतना बिन्दु है जो इस विज्ञान की धुरी के चारों और सतत गतिशील है। कुछ प्रश्न हैं यहॉ परः

* क्या है यह चेतना?

* कहाँ से आती है यह जीव में?

* कहाँ चली जाती है चेतना एक काल के बाद जिसके अगले ही क्षण जीव निश्तेज हो जाता है?

वैदिक विज्ञान के अनुसार चेतना एक अतिसूक्ष्म शक्ति पुन्ज के रूप में जीव को अस्तित्व में लाती है। अरबों परमाणु बमों से उत्पन्न ऊर्जा से भी कई अरब गुना ज्यादा शक्तिशाली माना गया है चेतना के अति सूक्ष्म रुपी पुन्ज का अति सूक्ष्म अंश जिसका कोई स्वरूप ही नहीं है। चेतना उस महाशक्ति का अत्यन्त सूक्ष्म अंश है जिससे सर्वत्र ब्रह्माण्ड चलायमान है। चेतना दिव्य जनित ऊर्जा है जो अलौकिक विद्युत तरंगों द्वारा विभिन्न माध्यमों से ब्रह्माण्ड में व्याप्त होती रहती है तथा माया से सम्पर्क करती है। दिव्य जनित माया के प्रभाव से जीव को चेतना के सृजन ,विकास एवं मुक्ति का पूर्ण अहसास कभी हो ही नहीं पाता अतः यह माना जा सकता है कि दैविक ऊर्जा मुक्ति के साथ चेतना का प्रमुख महाउर्जा स्रोत्र में समागम हो जाता है। यह वैज्ञानिक प्रक्रिया युग युगान्तर से कायम है।

जीव जब जीवन को धारण करता है जो जीवन में प्रथम ऊर्जा का सृजन होता है जिसे चेतना कहते है । जीवन के क्रमिक विकास के साथ भिन्न भिन्न सहायक ऊर्जाओं का निर्माण एवं अन्त होता रहता है। मूल ऊर्जा चेतना है तथा बाकी सब कुछ सहायक ऊर्जाऐं है जो निर्धारित क्रम मे अनुसार मूल ऊर्जा में मिलकर महाऊर्जा में विलुप्त हो जाती हैं। भारतीय दर्शन ने चेतना या प्राण के वैज्ञानिक स्वरूप को स्वीकार किया है। आधुनिक विज्ञान के पास अभी चेतना विज्ञान को मापने का कोई तय पैमाना नहीं है , अतः पूरा शारीरिक विज्ञान जीव चेतना लुप्त होते ही समाप्त हो जाता है तथा उसके आगे का शोध सिर्फ वैदिक विज्ञान के अदभुत दर्शन से ही सम्भव है। वैदिक विज्ञान के अनुसार जीव के शरीर से चेतना तुरन्त विलुप्त नहीं होती बल्कि क्रमिक रूप से क्षीण होती है। मानव शरीर जब रुग्ण हो जाता है, प्रमुखअंग धीरे धीरे कार्य करना बन्द कर देते हैं, स्मृति शून्यता की ओर बढ़ने लगती है तथा अन्त में वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित मृत्यु घोषित हो जाती है जिसे 'चेतना शून्य अवस्था कहा गया है। यहीं से आगे चेतना के आगे के मार्ग की यात्रा में झाँकने का मार्ग पुरातन वैदिक दर्शन में मिलता है जिसे जीव के 'अन्तिम संस्कार' की संज्ञा दी गई है। अब यह प्रश्न कि क्या है अन्तिम संस्कार, एवं चेतना की यात्रा में इसका क्या विशेष महत्व है? भ्रूण जब माँ के गर्भ में उदित होता है तो वहीं प्राण तत्व का उदय होता है जो चेतना का प्रथम स्वरूप है तथा जन्म के समय शिशु के मस्तिष्क में स्थापित हो जाता है जो मेरुदण्ड से जुड़ा है तथा वहीं से अपनी ऊर्जाओ का क्रमिक विकास करता है मगर अपना स्थान नहीं छोड़ता। वैज्ञानिक मृत्यु के साथ शरीर की सभी ऊर्जाओं का अन्त हो जाता है सिवाय उस प्रथम ऊर्जा का जो भ्रूण के रूप में दिव्य शक्ति मिली थी और ब्रह्मरन्द(मस्तिष्क का वह हिस्सा जिसमें ऊर्जा का मूल तत्व स्थापित हुआ था जन्म के समय)में स्थापित हो गई। अन्तिम संस्कार की प्रक्रिया में 'कपाल क्रिया' उसी दिव्य चेतना शक्ति को मुख्य ऊर्जा के भण्डार में विलुप्त कर देने की प्रक्रिया है जिसे सिर्फ वैदिक वाङमय से ही समझा जा सकता है।

चेतना तथा माया दो प्रबल दिव्य ऊर्जाऐं जो ब्रह्माण्ड में व्याप्त है। चेतना जीव की अर्न्तऊर्जा जब कि माया ब्रह्माण्ड में व्याप्त बाह्य ऊर्जा का स्वरुप है। जीव की अर्न्तऊर्जा से जब संदेश का सम्प्रेषण होता है तो उसका समागम बाह्य ऊर्जा यानि माया में होता है तथा इसी प्रक्रिया में चेतना का माया से सम्पर्क होता है तथा ब्रह्माण्ड के नियमों के अनुसार माया का आवरण बुद्धि पर हावी हो जाता है तथा जीव अर्न्तज्ञान की अपेक्षा मायाजाल में उलझ कर रह जाता है तथा क्रमानुसार चेतना विलुप्त हो जाती है तथा नव आवरण का एक नया क्रम प्रारम्भ हो जाता है। यही सृष्टि के विज्ञान का मूल नियम है। भारतीय दर्शन में योग एक ऐसी प्रक्रिया जिसके तहत प्राण या चेतना से मन के सम्पर्क को स्थिर किया जा सकता है। यह एक अत्यन्त जटिल प्रक्रिया है। जो जीव इस प्रक्रिया को साध लेते है उनकी अर्न्तऊर्जा का रस माया तत्व के मायाजाल से

बच जाता है तथा वे मानवता के हित में अति दुश्कर कार्य अत्यन्त सहजता से कर जाते है तथा महामानव बन जाते हैं। सुकरात, महात्मा गाँधी, सुभाष चन्द्र बोस जैसे व्यक्तियों का जीवन इस वैज्ञानिक प्रक्रिया का जीवन्त उदाहरण है।

देखना, सुनना, अनुभव करना, विचार करना, निर्णय करना आदि सभी कार्य चेतनाशक्ति के कारण होते हैं। चेतना के अभाव में यह जड़ शरीर कुछ भी नहीं कर सकता। यह चेतनशक्ति तीन अवस्थाओं में रहती है-जाग्रत, स्वप्नावस्था व सुषुप्ति। जाग्रत अवस्था में चेतनाशक्ति संसार का अनुभव करती है। श्रवण आदि ज्ञानेंद्रियां एवं शब्द आदि विषयों के द्वारा जो विशेष अनुभव होता है उसे जाग्रत अवस्था कहते हैं।

इस जाग्रत अवस्था में मनुष्य को अपने शरीर का अभिमान रहता है कि मैं शरीर हूं, तो यह आत्मा ही विश्व कहलाती है अर्थात यह इस स्थूल जगत से अन्य किसी तत्व का स्वीकार नहीं करती।स्वप्नावस्था में केवल मन सक्रिय रह कर विभिन्न विषयों का अनुभव मात्र करता है। उसमें क्रिया का अभाव रहता है।जाग्रत अवस्था में जो देखा, सुना जाता है, उसकी सूक्ष्म दृष्टि से निद्राकाल में जो जगत दिखाई देता है, वही स्वप्नावस्था है। इस अवस्था में चेतना को सूक्ष्म शरीर का अभिमान होने से आत्मा कहा जाता है। मैं कुछ नहीं जानता, सुख से निद्रा का अनुभव कर रहा हूं, यह सुषुप्ति अवस्था है। इस अवस्था में माया का सम्पर्क कुछ अल्पकाल के लिये चेतना से छूट जाता है जैसे मोबाइल में सिगनल न मिलने पर संप्रेषण अवरोधित हो जाता है। जैसे ही जीव सुषुप्ति अवस्था से जाग्रत अवस्था में प्रवेश करता है चेतना पूर्ण ऊर्जा से जाग्रत होती है तथा माया से सम्पर्क करती है एवं पुनः वही वैज्ञानिक प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है तथा जीव इन तरंगों के सम्प्रेषण में ही जीवन बिता देता है।

देवी जी की आरती

जय अम्बे गौरी,मैया जय श्यामा गौरी ।
तुमको निशदिन ध्यावत,हरि ब्रह्मा शिवरी ॥
ॐ जय अम्बे गौरी.. ॥

मांग सिंदूर विराजत,टीको मृगमद को ।
उज्ज्वल से दोउ नैना,चंद्रवदन नीको ॥
ॐ जय अम्बे गौरी.. ॥

कनक समान कलेवर,रक्ताम्बर राजै ।
रक्तपुष्प गल माला,कंठन पर साजै ॥
ॐ जय अम्बे गौरी.. ॥

केहरि वाहन राजत,खड्ग खप्पर धारी ।
सुर-नर-मुनिजन सेवत,तिनके दुखहारी ॥
ॐ जय अम्बे गौरी.. ॥

कानन कुण्डल शोभित,नासाग्रे मोती ।
कोटिक चंद्र दिवाकर,सम राजत ज्योती ॥
ॐ जय अम्बे गौरी.. ॥

शुंभ-निशुंभ बिदारे,महिषासुर घाती ।
धूम्र विलोचन नैना,निशदिन मदमाती ॥
ॐ जय अम्बे गौरी.. ॥

चण्ड-मुण्ड संहारे,शोणित बीज हरे ।
मधु-कैटभ दोउ मारे,सुर भयहीन करे ॥
ॐ जय अम्बे गौरी.. ॥

ब्रह्माणी, रूद्राणी,तुम कमला रानी ।
आगम निगम बखानी,तुम शिव पटरानी ॥
ॐ जय अम्बे गौरी.. ॥

चौंसठ योगिनी गावत,नृत्य करत भैरों ।
बाजत ताल मृदंगा,अरू बाजत डमरू ॥
ॐ जय अम्बे गौरी.. ॥

तुम ही जग की माता,तुम ही हो भरता,
भक्तन की दुख हरता,सुख संपति करता ॥
ॐ जय अम्बे गौरी.. ॥

भुजा चार अति शोभित,खडग खप्पर धारी ।
मनवांछित फल पावत,सेवत नर नारी ॥
ॐ जय अम्बे गौरी.. ॥

कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती ।
श्रीमालकेतु में राजत, कोटि रतन ज्योती ॥
ॐ जय अम्बे गौरी.. ॥

श्री अंबेजी की आरति, जो कोइ नर गावे ।
कहत शिवानंद स्वामी, सुख-संपति पावे ॥
ॐ जय अम्बे गौरी.. ॥

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी ।

भारत के महान संत श्रृंखला - श्री रामालिंगम स्वामी

- मनोज चतुर्वेदी, लखनऊ

तमिलनाडु के वडलुर जिले में एक महान संत हुए हैं ,श्री रामलिंगम स्वामी, जिनके बारे में उत्तर या पूर्वी भारत में बहुत कम जानकारी है। इस श्रृंखला का यही प्रयास है कि भारत के महान संतों की जानकारी हम सबको प्राप्त हो। श्री रामालिंगम स्वामी को भारत और विदेशों में वालालार के नाम से जाना जाता है। श्री रामलिंगम स्वामी का जन्म 5 अक्टूबर 1823 में श्री चिदम्बरम मंदिर से 16 किलोमीटर दूर मड़रूर गांव में हुआ। जब श्री रामलिंगम 5 माह के हुए तो उनकी माता चिन्नम माई और पिता रमैया पिल्लई, चिदम्बरम मंदिर ले गए। जब नटराज (भगवान शिव) की प्रतिमा पर से पर्दा हटाया गया तो रामालिंगम स्वामी जोर से हंसने लगे और पूरे मंदिर में दिव्य शान्ति छा गई। भगवान शिव और बालक रामलिंगम के मध्य वार्तालाप को देखता हुआ मंदिर का पुजारी दौड़ता हुआ आया और उसने घोषणा करी ये बालक ईश्वर पुत्र है और बहुत बड़ा संत होगा। श्री रामालिंगम स्वामी ने बाद में बताया कि जैसे ही ईश्वर की ज्योति उनके ऊपर पड़ी उनके शरीर में ईश्वरीय आनंद छा गया था और वे प्रसन्नता वश हंसने लगे थे। बालक रामलिंगम बचपन से ही बहुत मेधावी और भगवान् भक्त थे।उनकी पढ़ाई में कोई रुचि नहीं थी। उन्होंने अपने कमरे में एक शीशा रखा और एक दीपक और उसके सामने बैठ कर वे गहन ध्यान करने लगे। उन्हें पहले दर्शन श्री कार्तिकेय स्वामी (श्री मुरुगन) के हुए। 5 वर्ष की आयु से ही उन्होंने ईश्वर की प्रशंसा में कविताएं लिखना शुरू कर दिया था। उनकी उच्च आध्यात्मिकता देख कर शिक्षक ने उन्हें पढ़ाने से मना कर दिया। श्री रामालिंगम स्वामी ने लिखा कि उन्हें जो भी ज्ञान प्राप्त हुआ है वो सिर्फ ईश्वर संपर्क से हुआ है। श्री रामालिंगम स्वामी ने बहुत गहन साधना करी। यहां तक कि भोजन और निद्रा का भी त्याग कर दिया। 13 वर्ष की आयु में श्री रामालिंगम स्वामी ने सन्यास ले लिया। श्री रामालिंगम स्वामी ने ईश्वर को प्रकाश(अरूत पेरूम ज्योति) बताया। उन्होंने कहा इस मनुष्य शरीर के लिए मृत्यु आवश्यक नहीं है। मनुष्य अपने शरीर से अमरत्व प्राप्त कर सकता है। श्री रामा लिंगम स्वामी ने साधना के बल पर अपने शरीर में तीन परिवर्तन किए।

प्रथम परिवर्तन : श्री रामालिंगम स्वामी का मनुष्य शरीर पूर्ण शरीर में बदल गया। पूर्ण शरीर में कोई रोग,आयु, सर्दी, गर्मी, बरसात या मृत्यु का प्रभाव नहीं होता।

द्वितीय परिवर्तन : श्री रामालिंगम स्वामी का पूर्ण शरीर दयामय शरीर में बदल गया। इस शरीर में उनका रूप एक बालक के समान होगया।उनका शरीर देखा जासकता था किंतु छूआ नहीं जासकता था। उन्हें इस शरीर में सारी सिद्धियां प्राप्त हो गईं।

तृतीय परिवर्तन : श्री तामालिंगम स्वामी के शरीर का तृतीय और अंतिम परिवर्तन दयामय शरीर से परमानंद शरीर में हुआ जो ईश्वरीय है और सर्व विद्यमान है। इस शरीर की कोई मनुष्य कल्पना भी नहीं कर सकता।

श्री रामालिंगम स्वामी की शिक्षाएं : श्री रामालिंगम स्वामी के समय जाति प्रथा बहुत प्रचलित थी। स्वामी जाति प्रथा के घोर विरोधी थे। सन 1867 में श्री रामालिंगम स्वामी ने सत्य धर्म सलाई नामक सेवा शुरू की जहां सभी धर्म, जाति के मनुष्यों को निशुल्क भोजन मिलता था। ये सेवा आज भी सभी को निशुल्क भोजन प्रदान करती है। 1872 में श्री रामालिंगम स्वामी ने सत्य ज्ञान सभा की वडलुर (तमिलनाडु) में स्थापना करी। ये सभा आज भी है। सत्य ज्ञान सभा सभी धर्म ,जातियों के लिए आज भी खुली है। सिर्फ मांसाहारी इसमें प्रवेश नहीं कर सकते। यहां कोई फल, फूल या प्रसाद नहीं चढ़ाया जाता। यहां पर श्री रामालिंगम स्वामी ने जो दीपक जलाया था वो आज भी निरंतर प्रज्वलित रखा गया है। यहां सात सूती पर्दे हैं जो मनुष्य की आत्मा को अपना असली स्वरूप पहचानने में सात बाधाओं को दर्शाते हैं। इस सभा की एक प्रमुख शिक्षा थी कि प्राणियों की सेवा, मोक्ष का मार्ग है। श्री रामालिंगम स्वामी ने शाकाहार पर बहुत जोर दिया। उन्होंने कहा ज्ञान और दया ही ईश्वर हैं और इससे ईश्वर को प्राप्त किया जासकता है। श्री रामालिंगम स्वामी ने गरीबों को भोजन कराने को ईश्वर की सबसे बड़ी पूजा कहा। 30 जनवरी 1874 को श्री रामालिंगम स्वामी ने अपने शिष्यों को बुलाया और कहा वे जीवन समाप्त कर रहे हैं। उन्होंने सत्य ज्ञान सभा भवन में प्रवेश किया और शिष्यों से कहा दरवाजे का ताला न खोला जाय क्योंकि वहां कुछ नहीं मिलेगा। मई 1874 में सरकार के हस्तक्षेप से जब दरवाजा खोला गया तो वहां सिर्फ ज्योति थी। श्री रामालिंगम स्वामी सशरीर ईश्वर में विलीन हो चुके थे। श्री रामालिंगम स्वामी का आदर्श हम सब के लिए यही है कि इस शरीर से सब संभव है। हमें प्रयास अवश्य करना चाहिए।

घर

आज लौट कर वो सारे ज़माने आ गए,
जब घर हम हमारे वही पुराने आ गए।

घर पुराना यादों का आशियाना,
बचपन की उन हरकतों का फिर से दोहराना।

भागदौड़ भरी इस ज़न्दिगी से कभी फ़ुर्सत ही कहा मिली,
इन छोटे – छोटे लम्हों को कभी खुल के जी लें ऐसी मोहलत ही कहाँ मिली।

घर पर बैठ कर आज जब उन दिनों की याद आई,
तो ना जाने क्यूँ ? पर मेरी आँख थोड़ी भर आई।

बचपन में माँ कहती थी बाहर नहीं जाना हाबु आ जाएगा,
अब हमें क्या पता था कि एक दिन ये सच में आ जाएगा।

आज जब घर पर बैठ कर हर कोई पगला रहा है,
तब ये सोच कर हँसी आ जाती है कि ज़माना फिर से बचपन की ओर जा रहा है।

दूरदर्शन पर दूरदर्शन देखा जा रहा है,
दूर का दर्शन आज बस इसी से हो पा रहा है।

आज रामायण की धुन हर घर से सुनाई देती है,
राम के अवध लौटने की वो पहले वाली ख़ुशी दिखाई देती है।

महाभारत के चीर हरण की चर्चाएँ चारों ओर हैं,
काश ज़माना कुछ सीख ले फिर द्रौपदी नहीं कोई और है।

घर पर बैठ कर खेल निराले याद आए,
कुछ कट्टी और कुछ अब्बा याद आए।

आज फिर से उन दिनों को दोहराने बैठी हूँ,
जब मुद्दतों बाद ख़ुद से ख़ुद की मुलाक़ात को बैठी हूँ।

आज ताश के वो घर फिर से बनाया है,
जिस में क़ैद मैंने अपने आप को पाया है।

साँप – सीढ़ी के खेल में आज फिर से हार गई,
जब ऊपर तक जा कर मैं फिर से नीचे आ गई।

आज पानी पीते वक़्त जब बुलबुलों की आवाज़ आई,
तो वही बरसों पुरानी डाँट मैंने फिर से खाई।

वो कुछ मासूम सपने भी लौट कर वापस आ गए,
जब घर हम हमारे पुराने आ गए।

आज लौट कर वो सारे ज़माने आ गए,
जब घर हम हमारे वही पुराने आ गए।

– हरिप्रिया, (अंजली चतुर्वेदी)

बन्दघाटन समारोह

आपको अच्छी तरह याद होगा श्रीमान
दो साल पहले मैंने खोली थी एक किराने की दुकान
आपके चरण रज से मेरी दुकान हो गई थी पावन ।
और उसका उद्घाटन ।
हालांकि मेरे मित्रों ने मुझे सलाह दी थी।
कि आपसे उसका उद्घाटन न करवाऊँ।
क्योंकि आपके हाथ में नहीं है यश
लेकिन होनी पर चलता किसका वश
आपने अब तक जिसका भी किया उद्घाटन।
उनका तुरन्त हो गया कल्याण।।
उन्होंने उदाहरण सहित दिया था इसका प्रमाण।।
जिन तीन सहकारी समितियों का आपके कर कमलों
द्वारा हुआ था उद्घाटन
उनके खजांचियों के सोये भाग्य एकाएक जाग गये।
तीनों ने लम्बा गबन किया,
और शहर छोड़कर भाग गये।।
आपने एक अनाथालय का किया था उद्घाटन
किन्तु थोड़े दिनों के बाद ही अनाथालय के बच्चे
रहने लगे नगर के जेबकतरों के साथ।
फलस्वरूप मैनेजर सहित अनाथालय के
सभी कर्मचारी हो गये अनाथ ।।
एक हेयर कटिंग सैलून की तो बड़ी दर्दनाक कहानी
उसमें भी आपके हाथ की कारस्तानी रही ।।
उद्घाटन वाले दिन ही, हज्जाम के उस्तरे से
आठ आदमियों को हो गया टिटनेस।
सारा शहर रहा था विटनेस ।
वो बेचारा नदी का पुल
पहली वर्षा भी न झेल सका और ढह गया।
और तो और उसका फाउंडेशन स्टोन तक वह गया।

इन सबके बावजूद श्रीमान
आपके प्रति था मेरा झुकाव
इसलिये नहीं माना मित्रों सा सुझाव।
ऊपर आसमान, नीचे धरती।
मैंने भरसक ईमानदारी बरती।
न ब्लैक किया न जमाखोरी।
न स्मगलिंग की न चोरी।।
मेरी इस नेकनीयती से सरकारी कर्मचारियों को
होने लगी दिक्कत।
क्योंकि उन्हें नहीं मिल पाती थी मुझसे रिश्वत ।
वो आये दिन करने लगे मेरा चालान।
पहुँचाने लगे तरह-तरह से नुकसान।
तमाम लोगों से हो गई मेरी अदावत
दुकान देखता या अदालत।।
न मैं बिरला था न टाटा।
आखिर कब तक सहता घाटा।
श्रीमान इस दुकान से अब नहीं रहा है कोई मोह
इसलिये आयोजित कर रहा हूँ।
बन्दघाटन समारोह
कृपया पधारें, और इन हाथों से मुझे उबारे जिन हाथों से काटा था आपने इसके उद्घाटन का फीता अब उन्हीं हाथों से लगा दें इसमें पलीता।

– **प्रभाष चतुर्वेदी (मुन्ना),** कानपुर

कोयल

जब –जब तू कूका करती है, प्रश्न उठा करता मन में, इतना प्राण प्रद स्वर पाया, कैसे तूने जीवन में ?

कौन तपस्या करके, कोयल, इतना मीठा स्वर पाया? कौन तपस्या करके, कोयल , काली कर डाली काया?

किसी जन्म में, किसी देश की, कोकिल तू होगी रानी, होगी सम्मुख सुख सुविधा की,सब सामग्री कल्याणी।

घोर तपस्या करके तूने, क्षीण किया होगा तन को,
कठिन तपश्चर्या मे तूने लीन किया होगा मन को।
अग्नि परीक्षा में विजई हो और हुई होगी पावन,
तेरे तप के तेजोबल से डोला होगा इन्द्रासन ।
और कहा होगा तूने, नहीं चाहिए स्वर्ग मुझे,
नहीं चाहिए राज्य धरा का, और नहीं रूप वर्ग मुझे।
स्वर्ग प्रसन्न हुआ यदि मुझसे, मुझको ऐसा गाना।
कठिन तपस्या करके तूने ,सुमधर सुर पाया ,
और गवाही इस तप की है, तेरी यह काली काया।

– **नेम चन्द्र चतुर्वेदी,** तरसोखर

आज तो आपने हद ही कर दी

आज तो आपने हद ही कर दी
मेरी निजी ज़िंदगी के तहखाने में
घुसने की बेइंतहां ज़िद ही कर दी
सोचा था आपको
पलकों में बंद करके
आपको आपसे ही चुरा लूंगी
पर ये क्या किया
क्या आपको मालूम नहीं
किसी की ज़िंदगी के तहखाने में
प्रवेश इतना आसान नहीं
जीवन मेरा है, उसका आकर्षण,
प्यार सिर्फ मेरा है
आपका अपनापन दर्शाना अच्छी बात है
पर मेरी ज़िंदगी के किले की दीवार
बहुत ही मोटी है
मेरी इच्छा के विरुद्ध
उसमें प्रवेश वर्जित है

– **डॉ. चित्रा चतुर्वेदी,** कटनी

चिल्ल पो

आइये थोड़ा चिल्ल पो होना चाहिए...
आदतों से मजबूर तुम भी हो ,
आदतों से मजबूर हम भी है ।
ना कुछ बदलना चाहिए ,
आइये थोड़ा चिल्ल पो होना चाहिए ।।

आईने ने जो कुछ कहा ,
जो भी कहा सच कहा ।
सच क्या कबूल होना चाहिए ?
आइये थोड़ा चिल्ल पो होना चाहिए ।।

सन्नाटे को चीरती सनसनी ,
सुन्न कर देती है इंसान को ।
आज के इस दौर मे क्या सुन्न होना चाहिए ?
आइये थोड़ा चिल्ल पो होना चाहिए ।।

राज की बात अब खुल के होनी चाहिए,
राह चलते इंसान को फिर छेढना चाहिए।

एक उड़ता तीर ओर उसको देना चाहिए।
आइये फिर से थोड़ा चिल्ल पो होना चाहिए ।।

– **अभय राज चतुर्वेदी,** (गुरुग्राम)

दीप बुझाया न कीजिये...

रोते हुये को आप रुलाया न कीजिये ।
आवाज दे के वज़्म मे आया ना कीजिये ।।

करते रहे है जुल्म सितमगर के हाथ जो।
होठो से उनको दोस्त लगाया न कीजिये ।।

नमकीन करने आए क्यू अम्रत की धार को।
गंगा की तीर अश्क बहाया न कीजिये ।।

है मुस्कराहटो मे छुपी दामिनी कीताब ।
पंछी का हस के नीड़ जलाया न कीजिये ।।

आया था तेरी आँख का संकेत पाके राज ।
दामन से दिल का दीप बुझाया न कीजिये ।।

– **अभय राज चतुर्वेदी,** (गुरुग्राम)

अब हम छोटे हो गए !!

अब हम छोटे हो गए,
क्योंकि हमारे बच्चे बड़े हो गए
ऐसा मत करो,वैसा मत करो
ये खाया करो, वो खाया करो
दिन भर टीवी मत देखो
आखों पर असर पड़ेगा
कभी आँगन में ही घूम लिया करो
बच्चों से ही सीख लिया करो
अब हम बच्चे हो गए
क्योंकि बच्चे हमारे बड़े हो गए
अब तुम्हारी उम्र बढ़ रही है,
बचपना छोड़ो,
समझदारी की बातें किया करो!
कहा जाता है हमको,
हम भी हॉ में हॉ मिलाते,
जैसे सब सीख गए!
अब हम छोटे हो गए
क्योकि बच्चे हमारे बड़े हो गए!!
जो काम कर पाओ वही किया करो,
जब नहीं बनता तो किया ही मत करो,
किसी से कह दिया करो
अभी यह सब करने की उम्र नहीं है तुम्हारी !
कही चोट लग गई तो क्या होगा?
बिन बात के आफ़त आ जायेगी
अब हम छोटे हो गए
क्योकि बच्चे हमारे बड़े हो गए!!!

खीज जाते है कभी कभी
ज़दि में रूठ जाते है,
पर जल्दी ही मान भी जाते है
मीठा देख ललचा जाते हैं!!
क्या करें जाएं भी कहॉ,
अपने तो अपने ही होते है!
यह सोच फिर जुट जाते है

क्योंकि अब हम छोटे हो गए
बच्चे हमारे बड़े हो गए! !!!!!।

– **अनुराग चतुर्वेदी,** कानपुर

चुन कर कांटे राहों में.....

सूरज की किरणों से फैल गया दिन का उजियारा,
हम आगे बढे और बदल दे जीवन का नजरिया।।

जीत के जश्न को हम रोज मनाते यारों,
चुन कर कांटे राहों में फूलों को बिछाये यारो ।।
थक कर बैठ न जाना तुम पाना है अगर मंजिल को,
हाथ पे रख दो हाथ जरा,दिल से मिला लो दिल को।
एक बार उठा कर क़दमों को पीछे न हटायें यारों,
चुन कर कांटे राहों में फूलों को बिछायें यारों।।
पांव में डाल के न बैठें मायूसी की जंजीरें,
हिम्मत से छू ले अपने मंजिल की नजीरें।
हौंसले के परों से नीलगगन में उड़ते जायें यारों,
चुन कर कांटे राहों में फूलों को बिछायें यारों।।
कुछ पल के जीवन में पल पल खुशियां मनायें,
देख लकीरें हाथ की क्यूं आंखों से बहाये।
अपना कल हाथों से अपने आज हजारे यारों,
चुन कर कांटे राहों में फूलों को बिछायें यारों।।

– **दिलीप सिकंदरपुरिया,** लखनऊ

शाखा समाचार

गुरुजनों के साथ ज़ूम मीटिंग का आयोजन

गुरु सहदेव और गुरु कामेश्वर नाथ ने विस्तार से बताई चतुर्वेदी समाज की परम्पराएँ। चतुर्वेदी बांधवों की शंकाओं का भी किया समाधान।

विगत एक वर्ष में महासभा में एक नई सोच देखने को मिली है। इसके लिए महत्वपूर्ण है सभापति डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी का दृष्टिकोण। आम चतुर्वेदी बांधव हालांकि शिक्षा और रहन सहन की दृष्टि से सामान्य से बेहतर स्थिति में हैं। आम तौर पर महासभा द्वारा किये चतुर्वेदी समाज को सभी प्रयोग सकारात्मक लगे हैं। फिर चाहे यह प्रयास शिक्षा के क्षेत्र में सहायता, महिला सहायता या समाज में सम्मानित बांधवों का ज़ूम मीटिंग के माध्यम से अपने समाज से परिचय करवाना हो। इसी कड़ी में एक नई पहल की गई रविवार 25 जुलाई को जब हमारे समाज के दो गुरुओं को ज़ूम मीटिंग के माध्यम से समाज से जोड़ने का। इस प्रयास के पीछे कारण यह था कि अधिकतर लोग अपने व्यवसाय या नौकरी के कारण दूरस्थ शहरों में बस गए हैं और चतुर्वेदी समाज में स्थापित परम्पराओं के विषय में जानकारी का अभाव होने के कारण स्थानीय मान्यताओं को अपनाने पर मजबूर होते जा रहे हैं। जब यह विषय बार बार सभापति डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी के संज्ञान में आया तो यह प्रयास किया गया कि समाज के गुरु, जो अधिकतर मथुरा में ही रहते हैं, उनसे संवाद की कोई व्यवस्था बनाई जाए ताकि सम्पूर्ण समाज, फिर चाहे वो विश्व के किसी भी कोने में क्यों ना हो, समान परंपरा का निर्वाह करने में सक्षम हों।

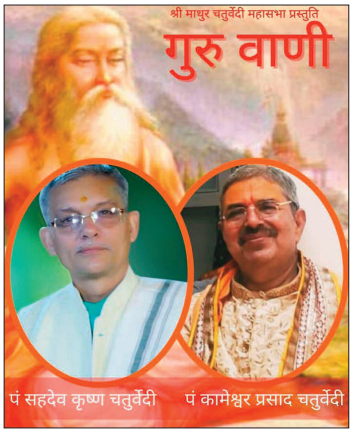

इस ज़ूम में बड़ी संख्या में देश भर से बांधवों ने भाग लिया। गुरुजनों में गुरु सहदेव कृष्ण चतुर्वेदी और गुरु कामेश्वर जी ने इस ऑनलाइन बैठक में भाग लिया। सर्वप्रथम गुरु सहदेव ने ऋग्वेद में वर्णित स्वस्ति वचन से कार्यक्रम का श्रीगणेश करके उन्होंने भगवान शिव की स्तुति द्वारा माहौल को भक्तिमय बना दिया। गुरु सहदेव ने श्रावण के पवित्र मास की महत्ता से सभी को अवगत करवाया। उन्होंने शिव जी द्वारा किये गए तांडव नृत्य के सन्दर्भ में बताया कि 'डांस' संस्कृत से निकला हुआ शब्द है। गुरु पूर्णिमा के विषय में उन्होंने बताया कि सभी वेदों और शास्त्रों के रचियता वेद व्यास जी का जन्म इसी दिन हुआ था। शास्त्रों के अनुसार सबसे पहले गुरुओं में माता, पिता और दीक्षा गुरु का नाम आता है। पुराणों में भी गुरु का उल्लेख किया गया है। दत्तात्रेय भगवान ने कहा है कि व्यक्ति जो भी ज्ञान किसी से अर्जित करता है। उसे उस व्यक्ति को उस विद्या का गुरु मानना चाहिए। दत्तात्रेय भगवान ने तो अपने जीवन में वायु, जल, समुद्र, अजगर, उरिन नाम का पक्षी, कुंवारी कन्या और वेश्या तक को गुरु माना है। इन सभी को गुरु मानने के उन्होंने कारण और कथा भी बताई है।

गुरु सहदेव ने बताया कि गुरु पूर्णिमा के दिन भगवान शिव विश्राम करने जाते हैं। इसके अलावा उन्होंने बताया कि श्रावण मास विशेष रूप से भगवान शिव और मां पार्वती का माना जाता है। इसके अलावा उन्होंने बताया कि श्रावण मास में पड़ने वाले मंगलवार को मंगला गौरी का व्रत और पूजन किया जाता है। इस माह में कृष्ण पक्ष की पंचमी को भी स्त्रियों द्वारा व्रत का विधान है। यह दिन भैया पांचे के नाम से जाना जाता है। इस दिन देवरानी-जेठानी कि कथा का वाचन भी किया जाता है। इस माह की तृतीय का महत्त्व बताते हुए गुरु जी ने कहा कि इस दिन श्री कृष्ण भगवान हिंडोले पर विराजमान हुए थे। इस दिन बहुत तपस्या के बाद माँ पार्वती को भगवान शिव की प्राप्ति हुई थी। इसे हरियाली तीज के नाम से भी जाना जाता है। इस दिन विवाहित महिलाओं को तीन संकल्प लेने चाहिए पति से निश्चल व्यवहार करें, दुर्व्यवहार ना करें और परनिंदा ना करें। यह शास्त्रों में उल्लेख है। पंचमी को नागों का स्वामी माना जाता है। नाग क्योंकि भगवान शिव के श्रृंगार हैं, इसलिए इस दिन नागों का पूजन किया जाता है। द्वार पर नाग सजाये जाते हैं, घर में पंचमुखी नाग का पूजन किया जाता है। बारह नागों का पूजन विशेष है। इसके बाद एकादशी आती है जिसे पुत्रदा एकादशी के नाम से जाना जाता है। इस दिन पुत्र की आकांक्षा रखने वाली महिलाएं इसका व्रत करती हैं और इसको करने से पुत्र की प्राप्ति होती है। द्वादशी पर पवित्र भगवान् बिष्णु और भगवन भोले नाथ को सूत से बने हुए पवित्र धारण करवाए जाते हैं और स्वयं भी धारण किये जाते हैं।

श्रवण शुक्ल द्वादशी से एक महीने तक शाक का भोजन वर्जित माना जाता है। इसके बाद रक्षा बंधन का त्यौहार आता है। इस विषय में गुरु जी ने युधिष्ठिर-कृष्ण संवाद के विषय में बताया जिसमें उन्होंने देव-दानवों के लगातार होते युद्धों में रक्षा सूत्र के प्रयोग से देवताओं की जीत की कथा सुनाई। इस दिन गुरु अपने यजमान के रक्षा बंधन करते हैं। मुग़ल सम्राटों ने भी

रक्षा बंधन के महत्त्व को पूरी तरह से सम्मान दिया। धीरे धीरे यह त्यौहार बहनों द्वारा भाईयों के रक्षा बाँधने का त्यौहार बन गया। रक्षा बंधन विशेष रूप से ब्राहमणों का त्यौहार माना जाता है। पारंपरिक रूप से दीपावली वैश्य समुदाय का और दशहरा क्षत्रियों का त्यौहार माना जाता है। श्रावण मास की शुक्ल पक्ष पर हरियाली तीज मनाई जाती है। इसके अलावा गुरु सहदेव ने बताया कि श्राद्ध के विषय में अक्सर लोगों को दुविधा रहती है। उन्होंने बताया कि तर्पण तीन प्रकार के होते हैं : देव तर्पण, ऋषि तर्पण और पितृ तर्पण।

मथुरा से ही गुरु कामेश्वर नाथ ने भी चतुर्वेदी समाज का मार्गदर्शन किया। उन्होंने बताया कि पुरातन में 48 संस्कार होते थे। जो बाद में 32 हुआ, फिर 25 और अब केवल 16 संस्कार की ही मान्यता रह गई है। संस्कारों में एक प्रमुख संस्कार है यज्ञोपवीत, गुरु कामेश्वर ने बताया कि जनेऊ की गाँठ में त्रिदेव का निवास होता है। उन्होंने कहा कि पहले जहाँ यज्ञोपवीत संस्कार धूम धाम और विस्तार से होता था। अब केवल लघु रूप में ही करने का चलन है। गुरु जी ने सभी अभिभावकों का आव्हान किया कि अगर अपनी अगली पीढ़ी को संस्कारी बनाना चाहते हैं तो उनके समक्ष वैसा ही उदहारण स्वयम को बनना पड़ेगा।

माता पिता के महत्त्व का वर्णन करते हुए उन्होंने श्री गणेश की कथा का उल्लेख भी किया। उन्होंने कहा कि बचपन से ही यह आदत डालनी चाहिए कि प्रातः सबसे पहले प्रत्येक बालक और बालिका माता पिता का वंदन करे।

इस ज़ूम मीटिंग में श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के सभापति डॉ प्रदीप चतुर्वेदी, सचिव मुनीन्द्रनाथ जी, ज्ञानेंद्र जी, महेंद्र जी, डॉ महेंद्र जी, नवीन जी, श्री वीरेन्द्र चतुर्वेदी आदि ने भाग लिया। अनेक महिलों ने इसमें भाग लिया।सभापति डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी ने बताया कि समाज के गुरुओं के साथ इस प्रकार की चर्चा आगे भी जारी रहेगी। जिससे सभी के शंका समाधान किये जा सकें।

– **संजय चतुर्वेदी,** (होलीपुरा/फ़रीदाबाद)

जनमाष्टमी महोत्सव – 'नन्द के आनंद भयो'

जनमाष्टमी के शुभ उत्सव पर ३० अगस्त २०२१ सायं ८ बजे माथुर चतुर्वेदी महासभा द्वारा भजन कीर्तन और नृत्य का (वरचुअल) कार्यक्रम आयोजित किया गया,। जिसकी अध्यक्षता माथुर चतुर्वेदी महासभा के सभापति आदरणीय प्रदीप चतुर्वेदी जी कर रहे थे। विशेष अतिथि महासचिव मुनीन्द्र नाथ जी थे। श्री ज्ञानेन्द्र चतुर्वेदी के संयोजन व श्रीमती अनुपमा चतुर्वेदी (कुवैत) और सुश्री सृष्टि चतुर्वेदी के संचालन में यह ज़ूम मीटिंग पर आयोजित कार्यक्रम अत्यधिक सफल रहा। कार्यक्रम लगभग चार घंटे लगातार बिना किसी अंतराल, विश्राम के चला जिसका सीधा प्रसारण आई टी सेल द्वारा यूट्यूब पर किया गया था। देश विदेश में यू ट्यूब पर इस भजन संध्या का आनंद लिया गया। जिसमें लगभग ५५० दर्शक जुड़े और सैकड़ों व्यूज़ भी मिले।

शुभारंभ सभापति महोदय श्री प्रदीप चतुर्वेदी जी के प्रोत्साहन भरे शब्दों से हुआ और उसके बाद सचिव श्री मुनीन्द्र नाथ जी ने सभी को आशीर्वाद देते हुए दो शब्द कहे। गायकों और नृत्यांगनाओं में चौरासी और बयासी वर्ष की वरिष्ठ महिलाओं से लेकर ५ साल की बालिका भी थी। छोटी-छोटी बालिकाओं और चौबे युवतियों ने माधव के भजनों पर सुन्दर नृत्य किए। भगवान कृष्ण की अनेक लीलाओं को दर्शाते हुए अनेक प्रकार के भजन गाए गए। सुर बद्ध, ताल बद्ध और अनेक वाद्य यंत्रों जैसे ढोलक, बाँसुरी इत्यादि से भजन संगीत सुसज्जित किया गया। इसमें चौबे समाज के प्रचलित भजन भी गाए गए और भगवान कृष्ण को रिझाने के लिए शुद्ध शास्त्रीय संगीत भी गाया – बजाया गया। सुदूर देशों से भी कलाकार सम्मिलित हुए। कार्यक्रम के अंत में सभी ने एक दूसरे को जनमाष्टमी की बधाई दी और 'बाँके बिहारी लाल की जय' की जयकार कर के समापन किया।

– **अनुपमा चतुर्वेदी,** (कुवैत)

दिल्ली

श्री माथुर चतुर्वेदी शाखा सभा दिल्ली की कार्यकारिणी की बैठक 21 अगस्त 2021 को अतुल कान्त जी के निवास पर आहूत हुई। श्री ज्ञानेन्द्र जी की गणेश वंदना से कार्यवाही प्रारम्भ हुई, ततपश्चात विगत बैठक की कार्यवाही को लोकेन्द्र जी, सचिव द्वारा पढ़कर सुनाया गया एवं कार्यकारिणी द्वारा अनुमोदित किया गया। महेश जी, अध्यक्ष ने सभी उपस्थित सदस्यों का परिचय कराया। उपस्थित कार्यकारिणी सदस्यों में कौशल जी, सुधांशु जी, दिवाकर जी एवं कमल कांत जी

(विशेष आमन्त्रित) थे। कार्यकारिणी बैठक में बिन्दुवार चर्चा हुई। अध्यक्ष जी ने श्री प्रशान्त जी (आगरा) को कार्यकारिणी में शामिल करने का प्रस्ताव रखा एवं कार्यकारिणी ने इसका अनुमोदन किया।सामूहिक दीपावली मिलन, दिल्ली NCR परिचय पत्रिका, विज्ञापन दरों के साथ ही साथ होली मिलन के आय-व्यय पर सभी सदस्यों द्वारा गहन चिंतन किया गया। कार्य कारिणी द्वारा अध्यक्ष महेश जी को अधिकृत किया गया कि वह दीपावली के आस पास शादियों एवं त्योहारों को ध्यान में रखकर तारीख निर्धारित कर गुरुग्राम, गाजियाबाद एवं नोएडा शाखा सभा के पदाधिकारियों के साथ संपर्क करें एवं दिल्ली सभा की कार्यकारिणी बैठक में आने का आमंत्रण दें। मयंक जी, कोषाध्यक्ष ने कार्यकारिणी के समक्ष पूर्व की निर्धारित विज्ञापन दरों में संशोधन करने का प्रस्ताव रखा एवं कार्यकारिणी ने सर्वसम्मति से विज्ञापनों हेतु निम्न दरें निर्धारित की जो निम्नानुसार है ::

* पहला अंदर का कबर रंगीन – 15,000/–
* पिछला अंदर का कबर रंगीन–10,000/–
* अंदर का रंगीन – 5,000/–
* अंदर का श्वेत श्याम – 3,000/–
* शुभकामना संदेश – 500/–
* पिछला कबर – (अधिकतम सहायता के लिए प्रयास)

साथ ही साथ यह भी निर्णय लिया गया कि विवरण पत्रिका सम्बन्धित जानकारी लेने के लिए अपने समाज या किसी अन्य व्यक्ति से कराने के लिए 10,000/– तक का खर्च करने का अनुमोदन किया गया। अंत में श्री अतुल कान्त जी को सुव्यवस्थित बैठक एवं रात्रि भोजन कराने के लिए सचिव द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

– **लोकेन्द्र नाथ चतुर्वेदी,** सचिव

कानपुर

28 जुलाई 2021 को स्व. बाबू ओंकार नाथ चतुर्वेदी स्मृति दिवस बाबू ओंकार नाथ चतुर्वेदी धर्मशाला कानपुर में मनाया गया। 28 जुलाई को ही बाबू जी का जन्म एवं निर्वाण दिवस है। इस अवसर पर श्री प्रदीप कुमार कटियार प्रधान आयुक्त सीजीएसटी मुख्य रूप से उपस्थित रहे तथा उनके द्वारा बाबूजी को श्रद्धा सुमन अर्पित किए गए। बाबू जी की स्मृति दिवस पर उनके पुत्र विकास चतुर्वेदी (चुन्ना भैया) के द्वारा एक 15 केवीए का जनरेटर सेट तथा 10 लीटर का एक ऑक्सीजन कंसंट्रेटर ,एक व्हीलचेयर,21000 रुपये धर्मशाला को भेंट किए तथा महासभा को 24000 रुपये अन्नपूर्णा सहायतार्थ भेंट किए। इस अवसर पर कानपुर सभा के अध्यक्ष श्री विजय

शंकर जी, महामंत्री प्रवेश चतुर्वेदी, आशुतोष जी ,अनूप जी आदि गणमान्य बाँधव उपस्थित रहे।

दिनांक 1 अगस्त 2021 को श्री माथुर चतुर्वेदी सभा कानपुर के कार्यकारिणी की बैठक बाबू ओंकार नाथ चतुर्वेदी धर्मशाला साकेत नगर कानपुर में संपन्न हुई। इस बैठक में करोना महामारी की तीसरी लहर की संभावना को देखते हुए चार ऑक्सीजन सिलेंडर संपूर्ण उपकरण सहित तथा एक कॉफिन (फ्रीजर) खरीदने का निर्णय लिया गया। साथ ही समाज के किसी व्यक्ति को करोना संक्रमित होने पर करोना की दवा उपलब्ध कराने का भी निर्णय लिया गया। कानपुर सभा के पास पूर्व से ही दो नेबुलाइजर, ऑक्सी फ्लोमीटर, व्हीलचेयर, वाकर आदि उपकरण मौजूद है। बैठक में 11 अगस्त को हरियाली तीज का त्यौहार मनाने का भी निर्णय लिया गया। इसकी जिम्मेदारी आशुतोष जी व अनूप जी को दी गई।

11अगस्त 2021 को श्री माथुर चतुर्वेदी सभा कानपुर के तत्वाधान में कानपुर समाज की महिलाओं के द्वारा हरियाली तीज का त्यौहार हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कानपुर समाज की महिलाओं की भागीदारी उत्साहित करने वाली थी। स्वल्पाहार के बाद कार्यक्रम समाप्त हुआ।

15 अगस्त 2021 को 75वे स्वतंत्रता दिवस समारोह का पर्व चतुर्वेदी धर्मशाला, कानपुर में धूमधाम से मनाया गया। सभा कार्यकारिणी के अलावा समाज के गणमान्य लोग भी मौजूद रहे। मिष्ठान वितरण के बाद कार्यक्रम समाप्त हुआ।

कोरोना महामारी की तीसरी लहर के आने की संभावना के दृष्टिगत रखते हुए श्री माथुर चतुर्वेदी सभा कानपुर का चिकित्सा प्रकोष्ठ पूर्ण रूप से सचेत है। इस संबंध में पूर्व में प्रकोष्ठ ने बड़ी उपलब्धि के अंतर्गत आज 4 ऑक्सीजन सिलेंडर मय उपकरण के समाज के हितार्थ खरीद लिए गए है,जो बाबू ओंकार नाथ चतुर्वेदी धर्मशाला, कानपुर में रखे हैं, जो विपरीत समय एवं विषम परिस्थिति मे समाज के काम आ सके।

– **प्रवेश चतुर्वेदी,** महामंत्री

समाज समाचार

* कु. आयुषी सुपुत्री दिवाकर जी (होलीपुरा/ग्वालियर) सुपौत्री स्व.केदार नाथ चतुर्वेदी पूर्व सभापति महासभा ने प्रथम प्रयास में सी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की और साथ ही MNC EARNEST & YOUNG (E&Y) गुरुग्राम में चयन हो गया है। आयुषी श्री त्रिभुवन जी (सी.ए.),संरक्षक,महासभा की भतीजी है। बधाई।

--

पंडित सुरेश नीरव को मिला साहित्यगंधा प्रज्ञा विभूति सम्मान कोलकाता की प्रतिष्ठित साहित्यिक संस्था रचनाकार का साहित्य के लिए दिया जाने वाला शिखर सम्मान रचनाकार 'साहित्य गंधा प्रज्ञा विभूति सम्मान' इस वर्ष लब्ध-प्रतिष्ठ साहित्यकार एवं पत्रकार पंडित सुरेश नीरव को दिया गया। सम्मान समारोह का आयोजन हिंदी दिवस के अवसर पर १४ सितंबर को प्रिंस्टन क्लब कोलकाता के सभागार में आयोजित किया गया। जिसका सीधा प्रसारण अखिल भारतीय सर्वभाषा संस्कृति समन्वय समिति के पटल से किया गया। बधाई।

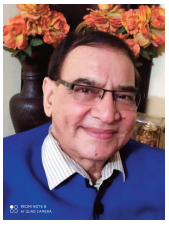

--

श्रीमती ऋतु चतुर्वेदी पत्नी श्री उत्पल चतुर्वेदी (कमतरी/ हैदराबाद) ने मिसेज इंडिया 2020-21 में प्रतियोगिता में मिसेज इंडिया - फ्रेश फेस ऑफ द ईयर 2020 -21 का खिताब जीता। बधाई।

सुश्री मेधा चतुर्वेदी पुत्री श्रीमति आभा एव मनोज चतुर्वेदी सुपौत्री श्रीमति जगदम्बा एवं श्री इन्द्रकुमार चतुर्वेदी (कमतरी/ कॉकेर/दिल्ली) ने सी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। बधाई। इस अवसर पर महासमा के लिए 501/- रुपये प्रदान किये। बधाई।

- (र.क्र. 2021/680)

शोक समाचार

* श्री राकेश चतुर्वेदी सुपुत्र स्व. श्री नरेश चतुर्वेदी भाईजी (तरसोखर/कटनी) का स्वर्गवास दिनाँक 17.09.2021 को हो गया।

* श्रीमती उर्मिला चतुर्वेदी पत्नी स्वर्गीय श्री पुष्पेन्द्र चतुर्वेदी (चौथियाना,मैनपुरी) का दिनाँक 09-07-2021 को 75 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया।

* श्रीमति सुबोधिनी चतुर्वेदी (मैनपुरी/कानपुर) का स्वर्गवास दिनाँक 03 सितंबर 2021 को कानपुर में हो गया।

* श्री विश्वनाथ चतुर्वेदी (होलीपुरा/ कानपुर) का स्वर्गवास दिनाँक 04 सितम्बर 2021 को कानपुर में हो गया।

* श्रीमती शारदा चतुर्वेदी पत्नी स्वर्गीय श्री अमरनाथ चतुर्वेदी (पुरा/नोएडा) का स्वर्गवास दिनाँक 26.08.2021 को 87 वर्ष की आयु में नोएडा में हो गया।

* श्री विशाल चतुर्वेदी (होलीपुरा/आगरा) का आसामयिक स्वर्गवास दिनाँक 07/09/2021 को आगरा में हो गया है। आप युवा मंच आगरा के पूर्व महामंत्री थे।

* श्री माथुर चतुर्वेदी सभा,कानपुर के वर्तमान अध्यक्ष श्री विजय शंकर चतुर्वेदी (करेंटी/कानपुर) का स्वर्गवास दिनाँक 22 सितंबर 2021 को कानपुर में हो गया। आप महासभा के पूर्व उपाध्यक्ष भी रहे थे। आप काफी लंबे समय से कानपुर समाज में सेवाकार्य कर रहे थे।

* श्री विपिन चंद्र चतुर्वेदी (आई.आर.एस) का स्वर्गवास दिनाँक 03.09.2021 को हो गया।

महासभा एवं चतुर्वेदी चंद्रिका परिवार दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।